रविवार

32 साल से देहरादून का विश्वास

27 अक्टूबर 2024

- देहरादून
- वर्ष 32
- अंक 257
- पृष्ठ 8
- मूल्य ₹ 1.00

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94

email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

एक नजर

केदारनाथ विधानसभा उपचुनावः कांग्रेस ने पूर्व विधयक मनोज रावत को दिया टिकट

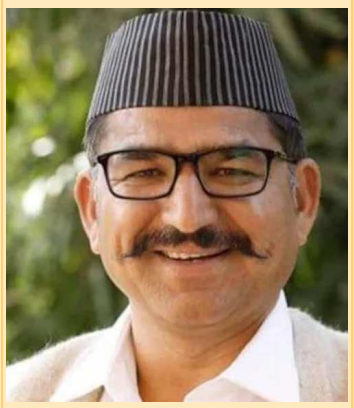

कार्यालय संवाददाता

नई दिल्ली/ देहरादून । कांग्रेस पार्टी ने उत्तराखंड की केदारनाथ सीट पर होने वाले उपचुनाव के लिए उम्मीदवार फाइनल कर लिए हैं। इस सीट से पार्टी ने पूर्व विधायक मनोज रावत को टिकट दिया है। कांग्रेस कमेटी ने रविवार को उनके नाम का ऐलान किया। इस सीट से रावत 2022 में चुनाव हार गए थे, लेकिन पार्टी ने उन पर भरोसा किया है। वह इस सीट से सोमवार को अपना नामांकन दाखिल करेंगे। वहीं भाजपा ने अभी तक विधानसभा उपचुनाव के लिए अपना प्रत्याशी घोषित नहीं किया है। 29 अक्टूबर को नामांकन की आखिरी तारीख है।

केदारनाथ सीट पर 20 नवंबर को उपचुनाव होने वाला है। यह सीट बीजेपी विधायक शैलारानी रावत के निधन के बाद खाली हुई थी। बद्रीनाथ और मंगलौर में हाल ही में मिली जीत से उत्साहित कांग्रेस केदारनाथ सीट के लिए रणनीति तैयार कर रही है। सर्वेक्षण के बाद कांग्रेस की पर्यवेक्षक टीम ने केंद्रीय नेतृत्व को 13 संभावित उम्मीदवारों की लिस्ट भेजी थी, जिन्होंने दिल्ली में प्रदेश नेताओं के साथ इन नामों पर चर्चा की। सूत्रों से पता चला कि पूर्व विधायक मनोज रावत को पार्टी का उम्मीदवार बनाए जाने की संभावना है, और बाद में पार्टी ने इन अटकलों पर मुहर भी लगाई।

1970 में जन्मे मनोज रावत के राजनीतिक करियर को देखें तो वह 2017 में कांग्रेस की टिकट पर विधायक बने थे, लेकिन 2022 के विधानसभा चुनाव में वह तीसरे स्थान पर रहे थे। हार के बावजूद रावत अपने क्षेत्र में लगातार बने रहे। यही वजह है कि पार्टी ने 2024 के विधानसभा उपचुनाव में उन पर भरोसा जताया है और केदारनाथ सीट से टिकट दिया है।

मुख्यमंत्री ने दीपावली पर्व पर प्रदेशवासियों को दी 130 नई बसों की सौगात

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज उत्तराखंड परिवहन निगम के बेड़े में 130 नई बसों को शामिल कर राज्य के विकास में एक और महत्वपूर्ण कड़ी जुड़ रही है। आधुनिक तकनीक से युक्त नई बसें हमारे राज्य के परिवहन तंत्र को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होंगी। ये बसें न केवल यात्रियों को सुरक्षित, सुविधाजनक और किफायती यात्रा का अनुभव प्रदान करेंगी, बल्कि प्रदेश की आर्थिक, सामाजिक और पर्यटन गतिविधियों में भी नई ऊर्जा का संचार भी करेंगी। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियां अन्य राज्यों की तुलना में चुनौतीपूर्ण हैं। राज्य के दुर्गम और सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्र बुनियादी सुविधाओं के लिए हमारे परिवहन नेटवर्क पर ही निर्भर हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पर्यटन क्षेत्र उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। ऐसे में प्रभावी परिवहन तंत्र न केवल यात्रियों की सुविधा के लिए अति-आवश्यक है, बल्कि आर्थिक विकास में भी अपना योगदान देता है। राज्य के हर कोने को बेहतर सड़क नेटवर्क और विश्वसनीय परिवहन सेवाओं से जोड़ना हमारा संकल्प है। उन्होंने कहा कि सरकार उत्तराखंड परिवहन निगम को मजबूती प्रदान करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। जहाँ कुछ वर्ष पूर्व तक हमारा परिवहन निगम 500 करोड़ से भी अधिक के घाटे में था। पिछले तीन वर्षों से परिवहन निगम लगातार मुनाफे में है। इसके लिए उन्होंने परिवहन निगम के अधिकारियों और कर्मचारियों के कार्यों की प्रशंसा भी की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस दशक को उत्तराखण्ड का दशक बनाने के लिए हम आगे बढ़ रहे हैं। आज अनेक क्षेत्रों में उत्तराखण्ड देश की अग्रणी राज्यों की श्रेणी में शामिल है। नीति आयोग द्वारा जारी सतत विकास लक्ष्यों में राज्य को प्रथम स्थान मिला है, इसे बनाये रखना हमारे लिए चुनौती है। राज्य की जीएसडीपी तेजी से बढ़ी है और बेरोजगारी दर घटी है। जल्द ही बस बेड़े में इलेक्ट्रिक बसों का भी समावेश किया जायेगा।

सरकार अपने चालक-परिचालकों की समस्याओं से भी भलीभांति परिचित है। इसके लिए चाहे डीए में बढ़ोतरी हो, 7वें वेतन आयोग की सिफारिशों को लागू करना हो या ▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

कुछ तो मजबूरियां रही होंगी...

कुमार विनोद

दामन प्यार का हो या सियासी पार्टी का, पकड़े या छोड़े जाने के लिए ही होता है! चांदी की दीवार न तोड़कर, प्यार भरा दिल तोड़ने वाली, किसी धनवान की बेटी का किरदार निभा रही हीरोइन जब निर्धन हीरो का दामन छोड़ देती है, तो फिल्मी पर्दे पर दिखने वाला कोई गीत जन्म लेता है, और जब कोई राजनेता अपनी पार्टी छोड़कर अन्य किसी सियासी दल के दामन को खूब धूम-धड़ाके के साथ थाम लेता है, तो अखबारों की हेडलाइन बनती है।

वक्त की नज़ाकत और मौके की ज़रूरत देखकर, कई बार तो नेता खुद ही इस छोड़-छुड़ाई की सच्ची-झूठी वजहें एक-एक करके गिनवा देते हैं, तो कभी-कभार कुछ नेता अपने इस सुकृत्य को शायराना अंदाज़ में यह कहकर भी जस्टीफ़ाई करते नज़र आ जाते हैं कि 'कुछ तो मजबूरियां रही होंगी, यूं कोई बेवफा नहीं होता।' अब यह सामने वाले की बौद्धिक क्षमता और पॉलिटिकल टेस्ट पर निर्भर करता है कि वह इन पंक्तियों की कैसी सप्रसंग व्याख्या करता है। वैसे जानकारों की मानें, तो सच्चे प्यार का दामन बारहमासी लहराता है, जबकि सियासी दामन चुनावी आहट सुनते ही फड़फड़ाने लगता है। बाज दफा किसी-किसी से दामन छुड़वाया जाता है और कभी-कभार जबरदस्ती पकड़वाया भी जाता है। महबूबा से पूछा जा सकता है, 'छोड़कर तेरे प्यार का दामन, ये बता दे कि हम किधर जाएं?' मगर सियासी पार्टी छोड़ने वालों को यह दुविधा कहां?

वैसे इश्क़-मुहब्बत के तजुर्बेकार खिलाड़ी व खुर्राट सियासतदां की एक पहचान यह भी है कि वह एक वक्त में कई दामन पकड़े रखता है। क्या पता, कब कोई दामन छूट जाए या फिर छोड़ना ही पड़ जाए! कुछ खास किस्म का दामन छोड़ने अथवा पकड़ने का मुंहमांगा दाम भी मिल जाता है, बशर्ते कि इस काम को सरअंजाम देने वाले या वाली में दम-खम हो। यूं तो हर सियासी पार्टी में उच्चकोटि के रफूगर भी पाए जाते हैं, जिनका काम ही इधर-उधर से उधड़ चले पार्टी के दामन की तुरपाई करना होता है। यह बात दीगर है कि कुछ उस्ताद किस्म के रफूगर वक्त-जरूरत किसी और ही पार्टी के सही-सलामत दिखने वाले दामन को थाम लेते हैं। वैसे किसी पार्टी विशेष के दामन पर अपना जन्मजात मालिकाना हक समझने वालों का इसी बात को लेकर आपस में गुत्थमगुत्था होने का आनंद अनिर्वचनीय है। वैसे भी दामन प्यार का हो, पार्टी का, या फिर दीन का, होता तो थामने के लिए ही है। फिर भले ही, 'बे-खुदी में जिसे हम समझे हैं तेरा दामन, ऐन मुमकिन है कि अपना ही गिरेबां निकले।'

वक्त की अर्जी, दर्जी की मर्जी

शमीम शर्मा

कुछ भी कहो दर्जी कमाल का व्यक्ति होता है। उसकी सबसे अच्छी बात एक ही है कि वह आपके माप को लेकर कभी कोई टिप्पणी नहीं करता बल्कि चुपचाप माप लेता है। बाकी सब लोग हमसे उम्मीद करते हैं कि पुराने माप के मुताबिक हम फिट रहें पर दर्जी नहीं। दर्जी के सामने किसी की मर्जी नहीं चलती। वह अपने हिसाब से चलता है और उसका अपना ही कलेंडर है। मंगलवार को डिलीवरी का वादा करने पर यदि आप मंगलवार को कपड़े लेने चले गये तो वह आपसे ही पूछेगा कि आपने यह तो पूछा ही नहीं कि कौन-सा मंगलवार। और आप उस पल सिवाय हैरान-परेशान होने के और कुछ नहीं कर सकते। दर्जियों की इसी लेट-लतीफी ने रेडीमेड गारमेंट इंडस्ट्री को आसमान छूने का मौका दे दिया।

शहरों के बड़े-बड़े विशाल मॉल्ज़ से लेकर गांवों की तंग गलियों तक में रेडीमेड गारमेंट्स की दुकानें अपना परचम लहरा रही हैं। इधर मैंने देखा है कि मारुति ८०० मॉडल की पुरानी कारों में रेडीमेड कपड़ों की चलती-फिरती दुकानें गांवों में खूब घूम रही हैं। घर-घर होने वाली सिलाई मशीनों पर धूल की परतें जम रही हैं। एक व्यक्ति ने अपने दोस्त से पूछा कि शादी के बढ़िया जोड़े कौन बनाता है तो जवाब मिला कि भगवान बनाता है। वह आदमी इस संदर्भ में अपनी अनभिज्ञता ज़ाहिर करते हुये बोला- ओहो! मैं तो दर्जी को दे आया। दुनिया में एक ही आदमी है जो गला भी काटता है और बाजू भी पर एक कतरा खून नहीं टपकता क्योंकि यही इंसान है जो दर्जी के रूप में नवसृजन करता है। कोरोना के बाद दर्जियों की एक समस्या तो बढ़ ही गई है कि अब हर महिला कहती है- भईया बचे हुये कपड़े का मास्क बना देना। वे भी दिन थे जब कपड़ा नापने के बाद एक दर्जी ने कहा कि इसमें तुम्हारा सफारी सूट नहीं बन सकता, कपड़ा कम है तो ग्राहक ने सवाल दागा कि फलां दर्जी तो कह रहा था कपड़ा पूरा है। इस पर दर्जी ने सफाई दी कि वह बना देता होगा मेरे बच्चे का साइज ज़रा बड़ा है। यानी कि दर्जी भी कपड़े में डंडी मारे बिना काम नहीं करते। मुझे आज तक उस कहानी का राज़ समझ नहीं आया कि दर्जी ने हाथी की सूंड में सूई क्यों चुभोई थी?

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

—प्रबंधक विज्ञापन

व्यक्ति को अमृत कर देती हैं भावनाएं

योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'

सच मानिए, भावना व्यक्ति को अमृत कर देती है। जिन्हें इस सच पर विश्वास न हो, वे श्रीकृष्ण और सुदामा की उस मुलाकात को याद कर लें, जब अपने बाल-सखा सुदामा के चरणों को द्वारिकाधीश ने आंसुओं के गंगा-जल से धोया था। याद कीजिए पन्ना धाय के उस त्याग को, जिसके बल पर उसने राजकुंवर को बचाने के लिए अपना पुत्र शत्रुओं को सौंप दिया। त्याग की भावना को विश्व की सर्वोच्च पावनतम भावना माना गया है। संत तिरुवल्लुवर का कथन है 'जिन्होंने सब कुछ त्याग दिया, वे मुक्ति के मार्ग पर हैं, बाकी सब मोहजाल में फंसे हुए हैं।' और कविकुल गुरु रवींद्रनाथ ठाकुर कहते हैं कि 'प्रेम के बिना त्याग नहीं होता और त्याग के बिना प्रेम असंभव है।' त्याग की भावना पर मुझे कविवर गजानन माधव मुक्तिबोध की पंक्तियां याद आती हैं। वे कहते हैं :-

'अब तक क्या किया? जीवन क्या जिया?

ज्यादा लिया और दिया बहुत-बहुत कम,

मर गया देश, अरे! जीवित रह गए तुम?'

आज मुझे इसी 'त्याग-भावना' पर मेरे एक आत्मीय ने ऐसी पोस्ट भेजी है।

'शहर के एक अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के विद्यालय के बग़ीचे में तेज़ धूप और गर्मी की परवाह किये बिना, बड़ी लगन से पेड़-पौधों की काट-छांट में वह लगा हुआ था कि तभी विद्यालय के चपरासी की आवाज़ सुनाई दी, अरे! गंगादास! तुझे प्रधानाचार्या जी तुरंत बुला रही हैं।' गंगादास शीघ्रता से उठा, हाथों को धोकर साफ़ किया और तेजी से प्रधानाचार्या के कार्यालय की ओर चल दिया। गंगादास एक ईमानदार कर्मचारी था और अपने कार्य को पूर्ण निष्ठा से पूर्ण करता था। वह प्रधानाचार्या के कार्यालय पहुंचा, 'मैडम, क्या मैं अंदर आ जाऊं? आपने मुझे बुलाया था।'

'हां, आओ और यह देखो' प्रधानाचार्या गंगादास से बोली। उनकी उंगली एक पेपर की ओर इशारा कर रही थी। 'पढ़ो इसे' प्रधानाचार्या ने आदेश दिया। 'मैं तो इंग्लिश पढ़ना नहीं जानता मैडम!' गंगादास ने घबरा कर उत्तर दिया। 'मैं आपसे क्षमा चाहता हूं मैडम। यदि कोई गलती हो गयी हो तो। मैं आपका और विद्यालय का पहले से ही बहुत ऋणी हूं, क्योंकि आपने मेरी बिटिया को इस विद्यालय में नि:शुल्क पढ़ने की इज़ाज़त दी है।' गंगादास बिना रुके घबरा कर बोलता चला जा रहा था।

प्रधानाचार्या ने गंगादास को टोका, 'तुम बेकार में अनुमान लगा रहे हो। थोड़ा इंतज़ार करो, मैं तुम्हारी बिटिया की क्लास टीचर को बुलाती हूं।' गंगादास सोच रहा था कि क्या उसकी बिटिया से कोई ग़लती हो गयी? अब तो उसकी चिंता और बढ़ गयी थी। क्लास टीचर के पहुंचते ही प्रधानाचार्या बोली, 'हमने तुम्हारी बिटिया की प्रतिभा को देख और परख कर ही उसे अपने विद्यालय में पढ़ने की अनुमति दी थी। अब ये मैडम इस पेपर में जो लिखा है, उसे पढ़कर हिंदी में तुम्हें सुनाएंगी।' कक्षा-अध्यापिका बोली, 'आज 'मदर्स डे' था, मैंने कक्षा में सभी बच्चों को अपनी अपनी मां के बारे में एक लेख लिखने को कहा। अध्यापिका ने गंगादास की बेटी का लिखा हुआ लेख पढ़ना शुरू किया।

'मैं एक गांव में रहती थी। एक ऐसा गांव, जहां शिक्षा और चिकित्सा की सुविधाओं का आज भी अभाव है। चिकित्सा के अभाव में कितनी ही मांयें दम तोड़ देती हैं बच्चों के जन्म के समय। मेरी मां भी उनमें से एक थीं। उन्होंने मुझे छुआ भी नहीं कि चल बसीं। मेरे पिता ही वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने मुझे गोद में लिया। बाक़ी की नज़र में तो मैं 'अपनी मां को खा गई' थी। मेरे दादा-दादी चाहते थे कि मेरे पिताजी दुबारा विवाह करके एक पोते को इस दुनिया में लायें ताकि उनका वंश आगे चल सके, परंतु मेरे पिताजी ने उनकी एक न सुनी और दुबारा विवाह करने से मना कर दिया। इस वज़ह से मेरे दादा-दादीजी ने उनको अपने से अलग कर दिया और पिताजी सब कुछ, ज़मीन, खेतीबाड़ी, घर की सुविधा आदि छोड़ कर, मुझे साथ लेकर, शहर चले आये और इसी विद्यालय में माली का कार्य करने लगे। मेरी ज़रूरतों पर मां की तरह हर पल उनका ध्यान रहता है।'

'यदि संक्षेप में कहूं कि प्यार, देखभाल, दयाभाव और त्याग मां की पहचान हैं, तो मेरे पिताजी उस पहचान पर पूरी तरह से खरे उतरते हैं और मेरे पिताजी विश्व की 'सबसे अच्छी मां' हैं। आज 'मातृ दिवस' पर मैं अपने पिताजी को यही कहूंगी कि आप संसार के सबसे अच्छे पालक हैं। बहुत गर्व से कहूंगी कि ये जो हमारे विद्यालय के परिश्रमी माली हैं, ये मेरे पिता हैं।' लेख के आख़िरी शब्द पढ़ते-पढ़ते अध्यापिका का गला भर आया था और प्रधानाचार्या के कार्यालय में शांति छा गयी थी। इस शांति में केवल माली गंगादास के सिसकने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह केवल हाथ जोड़ कर वहां खड़ा था। उसने उस पेपर को अध्यापिका से लिया और अपने हृदय से लगाकर फूट-फूट कर रो पड़ा।

प्रधानाचार्या ने खड़े होकर उसे एक कुर्सी पर बैठाया और एक गिलास पानी देकर कहा, 'गंगादास तुम्हारी बिटिया को इस लेख के लिए पूरे १० में से १० नम्बर मिले हैं। हम कल विद्यालय में 'मदर्स डे' बड़े ज़ोर-शोर से मना रहे हैं। विद्यालय की प्रबंधक कमेटी ने आपको इस कार्यक्रम का मुख्य अतिथि बनाने का निर्णय लिया है। यह सम्मान होगा उस प्यार, देखभाल, दयाभाव और त्याग का, जो एक आदमी अपने बच्चे के पालन के लिए कर सकता है। साथ ही यह अनुशंसा है उस विश्वास की, जो आपकी बेटी ने आप पर दिखाया है।' मुझे बताइए, क्या गंगादास के त्याग की पावन भावना और उसकी पुत्री की असीम कृतज्ञता की गंगा ने एक माली को अमृत नहीं बना दिया है? क्या आप इस पिता के उस त्याग को भूल सकते हैं, जो उसने 'मां' बन कर अपनी बेटी को पालन करने में दिखाया है? भावना के इस अमृत को बचाए रखिए, यही आप को भी अमृत बनाएगा।

सर्दियों में बच्चों को फिट एंड फाइन रखने के लिए कराएं ये एक्टिविटीज

सर्दियों के मौसम में बड़ों की तरह बच्चे भी खुद को आलस और थका हुआ महसूस करते हैं। ऐसे में माता-पिता की जिम्मेदारी है कि उनकी दिनचर्या में थोड़ा सा बदलाव करके वे उन्हें फिट एंड फाइन बनाए रख सकते हैं। आइए आज हम आपको कुछ ऐसी एक्टिविटीज के बारे में बताते हैं, जिनकी मदद से आप अपने बच्चे को फिट एंड फाइन के साथ-साथ एक्टिव रखने में मदद कर सकते हैं।

रोप स्किपिंग

यह एक्टिविटी बच्चों के लिए एक बेहतरीन वर्कआउट है। अच्छी बात तो यह है कि बच्चे रोप स्किपिंग को बेहद आसानी से अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना सकते हैं। इसके लिए अभिभावक खुद भी बच्चों के साथ रोप स्कीपिंग करें। मस्ती-मस्ती में रोप स्किपिंग करने से न सिर्फ बच्चों के शरीर की मांसपेशियों को मजबूती मिलेगी बल्कि वह खुद को ऊर्जावान भी महसूस करेंगे। इसलिए अभिभावक बच्चों को रोजाना कुछ मिनट रोप स्किपिंग जरूर करवाएं।

एरोबिक्स

एरोबिक्स को भी बच्चों के रूटीन में शामिल करना काफी फायदेमंद साबित हो सकता है। इसका मुख्य कारण यह है कि एरोबिक्स करने से न सिर्फ हृदय को मजबूत बनाया जा सकता है बल्कि इससे शरीर की कोशिकाओं को ऑक्सीजन सरकुलेट करने में भी मदद मिल सकती है। बता दें कि जितना फायदा बच्चों को स्विमिंग, जॉगिंग, वॉकिंग और साइकिलिंग आदि से मिल सकता है उतना ही फायदा उन्हें एरोबिक्स करने से भी मिल सकता है।

पाइलेट्स

पाइलेट्स एक तरह की शारीरिक एक्सरसाइज होती है और इसका सीधा सकारात्मक असर बच्चों के शरीर की कोर स्ट्रेंथ और प्रॉपर एलाइमेंट पर पड़ता है। इस एक्सरसाइज को बच्चों की दिनचर्या में शामिल करने से न सिर्फ मांसपेशियों को मजबूती मिल सकती है, बल्कि बुरे हार्मोन्स से भी दूरी बनी रहती है, जिससे तनाव भी दूर रहता है। तनाव दूर करने के अलावा पाइलेट्स करने से बच्चों की हड्डियां भी मजबूत होती हैं।

योगाभ्यास

योगाभ्यास न सिर्फ बच्चे शारीरिक पॉश्चर को सुधारने में मदद कर सकता है, बल्कि शरीर को लचीला बनाने के साथ-साथ कई तरह के अन्य स्वास्थ्य लाभ देने में भी काफी हद तक मदद कर सकता है। विशेषकर अगर बच्चे योगाभ्यास के तौर पर सांस संबंधी प्राणायाम का रोजाना अभ्यास करते हैं क्योंकि प्राणायाम एक जगह पर ध्यान केंद्रित कर दिमाग को शांत रखने में सहायक होते हैं और इससे बच्चों में सकारात्मक ऊर्जा का स्तर बढ़ता है। (आरएनएस)

इन मुख्य पांच कारणों से झड़ते है आपके बाल, जानिए इनके उपाय

हर कोई अच्छे बाल रखने की चाह रखता है, लेकिन झड़ते बालों के कारण आपकी ये चाहत अधूरी ही रह जाती है। इस कारण से कुछ लोग तो महंगे से महंगा शैंपू और कंडिशनर इस्तेमाल करते हैं फिर भी झड़ते बालों से परेशान रहते हैं और अपनी उम्र से ज्यादा बड़े लगने लगते है। इस समस्या से बचने के लिए आपको इसके कारण पता होने चाहिए। तो आइए जाने इसके कारण और उपाय।

आनुवंशिकता : इसका मतलब यह है कि अगर आपके परिवार में माता-पिता में से किसी को बाल झड़ने की समस्या है, तो यह आपको भी हो सकती है। इसमें आगे के हिस्से के बाल गिरने लगते हैं या कम होने लगते हैं। दवाइयां: कैंसर, गठिया, डिप्रेशन आदि रोगों के उपचार कि दवाईयां भी बालों के झड़ने का कारण बनती हैं। तनाव: बालों के कमजोर होने का प्रमुख कारण शारीरिक या मानसिक रूप से तनावपूर्ण होना है।

हार्मोन में बदलाव: डॉक्टरों का कहना है कि हार्मोंस में बदलाव के कारण भी बाल झड़ते हैं। हार्मोंस में बदलाव गर्भावस्था, बच्चे को जन्म देते हुए, रजोनिवृत्ति,

थायरॉयड आदि के कारण होते हैं। कुछ हेयर स्टाइल और हेयर ट्रीटमेंट: कुछ हेयर स्टाइल जो बालों पर दबाव डालते हैं, वे भी बालों के झड़ने का कारण हो सकते हैं। इसके अलावा कुछ घरेलू उपचार जैसे गर्म तेल आदि जो कि हमारे बालों के झड़ने का कारण बन जाता है।

आनुवंशिकता पीड़ित लोगों के बालों को झड़ने से रोका नहीं जा सकता है, लेकिन कुछ उपायों से झड़ते बालों की समस्याओं को ठीक किया जा सकता है। वह उपाय इस प्रकार हैं: 1) टाइट हेयर स्टाइल जैसे चोटी और पोनीटेल न बनाए। ज्यादा बालों को खींचने या मोड़ने में उलझे न रहें। 2) दवाइयों के सेवन से बचें, जो बालों के झड़ने का कारण होती हैं। 3) आर्टिफ़िशियल बालों का उपचार जैसे हॉट रोलर्स, कर्लिंग आयरन से बचें।

अपने बालों को हल्के हाथों से धोएं और कंघी करें। कंघी करने के लिए, चौड़े दांतों वाली कंघी का ही इस्तेमाल करें। 5) अपने बालों को तेज धूप और यूवी किरणों के अन्य स्रोतों से बचाएं। 6) धूम्रपान से भी बाल झड़ते हैं, इसलिए धूम्रपान न करें। नोट: यदि इन उपायों से भी आपके झड़ते बालों की समस्या समाप्त नहीं होती है। तो किसी डर्मेटोलॉजिस्ट को दिखाएं। शायद आपके बालों के झड़ने का कारण कुछ और हो सकता है।

मॉइश्चराइजिंग क्रीम खरीदते समय इन बातों का रखें खास ध्यान

भले ही मौसम कोई भी हो, नियमित तौर पर त्वचा को मॉइश्चराइज करना जरूरी है। इससे त्वचा पर नमी बरकरार रहती है और यह हमेशा खिली-खिली नजर आती है। हालांकि क्या आप जानते हैं कि मॉइश्चराइजिंग क्रीम में क्या-क्या आवश्यक गुण होने चाहिए और त्वचा के प्रकार के अनुसार कौन सी मॉइश्चराइजिंग क्रीम का इस्तेमाल करना चाहिए? शायद नहीं, तो आइए जानते हैं कि मॉइश्चराइजिंग क्रीम खरीदने से पहले किन-किन बातों का खास ख्याल रखना चाहिए।

त्वचा के प्रकार के अनुसार चुनें मॉइश्चराइजिंग क्रीम

अगर आप यह चाहते हैं कि मॉइश्चराइजिंग क्रीम से आपको भरपूर फायदा मिले तो इसे हमेशा अपनी त्वचा के प्रकार के अनुसार ही चुनें। बेहतर होगा कि रूखी त्वचा वाले लोग ऑयली बेस वाली मॉइश्चराइजिंग क्रीम का इस्तेमाल करें, वहीं तैलीय त्वचा वाले लोग जेल बेस मॉइश्चराइजिंग क्रीम लगाएं। अगर आपकी त्वचा बहुत ही ज्यादा संवेदनशील है तो कोई भी मॉश्चराइजर लगाने की बजाय डॉक्टर द्वारा बताई गई मॉइश्चराइजिंग क्रीम का इस्तेमाल करें।

स्किन टोन पर भी दें ध्यान

मॉइश्चराइजिंग क्रीम खरीदते समय स्किन टोन पर ध्यान देना भी जरूरी है क्योंकि कई मॉश्चराइजर हैवी ऑयल बेस वाले होते हैं, जिनके कारण त्वचा का प्राकृतिक रंग दब जाता है। इसलिए इन्हें खरीदते समय अपने स्किन टोन पर भी ध्यान दें और एक पेच टेस्ट जरूर लें। पेच टेस्ट के दौरान मॉइश्चराइजिंग क्रीम को चेहरे की बजाय हाथों पर लगाएं। अगर इससे आपकी रंगत में कोई बदलाव नहीं आता तो क्रीम को खरीद लें।

जब भी आप मॉइश्चराइजिंग क्रीम खरीदने जाएं तो यह जरूर चेक हैं कि वो एसपीएफ वाली है या नहीं। दरअसल, एसपीएफ युक्त मॉइश्चराइजिंग क्रीम की मदद से आप अपनी त्वचा को सूर्य की हानिकारक यूवी किरणों से बचाकर रख सकते हैं। बेहतर होगा कि आप अपनी त्वचा के प्रकार के अनुसार 50 या फिर 30 स्क्क्र युक्त मॉइश्चराइजिंग क्रीम खरीदें और धूप में निकलने से 15 मिनट पहले इसे त्वचा पर लगाएं।

संस्कारों की दौलत ही सच्चा धन

योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरुण'

आजकल समाज में संस्कारों की कमी देखकर कभी-कभी मन उद्वेलित हो उठता है। समाचारपत्रों में ऐसे समाचार देखकर कि कोई वृद्धा मां या वृद्ध पिता विदेश में या किसी बड़े शहर में नौकरी करने गए अपने पुत्र को देखने को तरसते रहते हैं और एकाकी रहते हुए जब मर जाते हैं, तो भी पुत्र अंतिम संस्कार के लिए नहीं आ पाते तो मन व्यथित हो उठता है। तब मन में एक ही सवाल कौंधता है कि यह दौलत किस काम की जो मां-बाप को अपनी औलाद से दूर कर दे?

लोकजीवन में बार-बार सुनी हुई एक कहावत मन में अनायास ही गूंज उठती है-पूत सपूत तो क्यों धन संचै, पूत कपूत तो क्या धन संचै अर्थात् अगर किसी का पुत्र कपूत हो तो उसके लिए धन एकत्र करना बेकार ही है, क्योंकि वह तो मुफ्त मिले धन को उड़ा ही देगा। और अगर पुत्र सपूत है तो उसके लिए धन एकत्र करना व्यर्थ है क्योंकि वह तो स्वयं ही अपने संस्कारों के बल पर इतना धन कमा लेगा कि किसी और के धन की उसे जरूरत ही नहीं होगी।

आज सबसे बड़ा सवाल यही है कि माता-पिता अपने बच्चों को इंजीनियर और डॉक्टर बनाकर विदेशों में धन कमाने तो भेज देते हैं और फिर अकेले वृद्धावस्था में उन्हें देखने तक को तरस जाते हैं। समाज में वृद्धाश्रम आखिर क्यों हैं? क्या हमारी संयुक्त परिवार-प्रथा से मिले संस्कारों से हमारा जीवन सुख से भरापूरा नहीं रहता था? एकल परिवार हमारे अवसाद का बड़ा कारण बनते जा रहे हैं, यह आज का ऐसा भीषण सच है, जिसने समाजशास्त्रियों को बेचैन कर दिया है।

लगभग दस साल की उम्र का अख़बार बेचने वाला एक बालक एक मकान का गेट बजा रहा था, तभी मालकिन ने बाहर आकर पूछा, 'क्या बात है?' बालक बोला,

,आंटी जी, क्या मैं आपका गार्डेन साफ कर दूं?, तो मालकिन ने उसे मना कर दिया। बालक ने हाथ जोड़ते हुए दयनीय स्वर में उस महिला से कहा, 'प्लीज आंटी जी, करा लीजिये न, मैं बहुत अच्छे से साफ करूंगा।' द्रवित होकर मालकिन ने पूछा, 'क्या लेगा? तो बालक बोला कि पैसा नहीं देना आंटी जी, मुझे तो आप खाना दे देना।' मालकिन बोली, 'लेकिन अच्छे से काम करना है।' औरत ने सोचा कि शायद लड़का भूखा है तो मैं पहले इसे खाना दे देती हूंउसने लड़के से कहा कि बेटे पहले खाना खा ले, फिर काम कर लेना। लड़के ने उत्तर दिया, 'नहीं, नहीं, आंटी जी, पहले आपका काम कर लूं, फिर आप मुझे खाना दे देना।' एक घंटे बाद लड़के ने मालकिन को बुलाकर कहा, 'आंटी जी, देख लीजिए, सफाई अच्छे से हुई है कि नहीं।' मालकिन खुश होकर बोली, 'अरे वाह! तूने तो बहुत ही बढ़िया सफाई की है, सारे गमले भी करीने से जमा दिए हैं। यहां बैठ, मैं तेरे लिए खाना लाती हूं।' जैसे ही मालकिन ने उसे खाना लाकर दिया, तुरंत बालक अपने जेब से एक पन्नी का लिफाफा निकाल कर उसमें खाना रखने लगा। यह देखकर मालकिन बोली कि तूने भूखे ही सारा काम किया है, अब खाना तो यहीं बैठ कर खा ले। यह सुनकर बालक ने कहा, 'नहीं, नहीं आंटी जी, मेरी बीमार मां घर पर है। सरकारी अस्पताल से उसके लिए दवा तो मिल गयी है, पर डॉ. साहब ने कहा है कि यह दवा खाली पेट नहीं खानी है। मैं मां के लिए खाना घर ले जाऊंगा और मां को खिलाकर दवाई भी दे दूंगा।'

लड़के की यह बात सुनकर मालकिन रो पड़ी और अपने हाथों से उस मासूम को, उसकी दूसरी मां बनकर खुद खाना खिलाया और फिर उसकी मां के लिए भी रोटियां बनाई और लड़के के साथ उसके घर जाकर उसकी मां को रोटियां खिलाकर आयी। भावुक होकर लड़के की मां से उसने कहा, 'बहन, आप तो बहुत अमीर हो। जो दौलत आपने अपने बेटे को दी है, वो तो हम अपने बच्चों को दे ही नहीं पाते हैं! आज तुम्हारे बेटे ने मुझे अहसास कराया है कि मां-बाप का सम्मान कैसे किया जाता है? बहन, मेरे पास चांदी-सोना तो बहुत है, लेकिन तुम्हारे जैसा ऐसा बेटा नहीं है।' क्या हमने खुद अपने जीवन को सिर्फ और सिर्फ धन-दौलत की चमक का गुलाम नहीं बना लिया है? किसी के घर कार आ जाए तो हम उसे बधाइयां देते हैं, लेकिन जब संस्कार मिट रहे हों, तो हमें बिल्कुल चिन्ता या दु:ख नहीं होता?

अवगुण की संगति से घटती गुण महिमा

दिनेश चमोला 'शैलेश'

जीवन के विकास तथा व्यक्तित्व के निर्माण में परिवेश एवं सामाजिक स्थितियों की महती भूमिका होती है। जिस परिवेश में मनुष्य बचपन से जीवनयापन करता चलता है, संस्कारों से, उस उर्वरा भूमि से ही वह जहां कुछ न कुछ सीखता है, वहीं सक्षम होने पर कुछ न कुछ नैसर्गिक रूप से उसे गुणात्मक रूप में लौटाता भी रहता है।

यह दुर्लभ जीवन, जहां क्षण-क्षण सहेज कर इसे नाना प्रकार के गुणात्मक पुष्पों से अलंकृत कर सजाता-संवारता रहता है, उसके समानांतर ही द्वेष का दैत्य इसके महत्व व वैभव को भंजित करने की घात लगाए बैठा रहता है। संगति अथवा कुसंगति का प्रभाव, मानवीय चरित्र के विकास व ह्रास की दिशा व दशा को सुधारने अथवा बिगाड़ने में पूर्ण रूप से सहायक होता है। संगति की किसी भी मनुष्य के जीवन-विकास अथवा जीवन-लक्ष्य निर्धारण में अपूर्व भूमिका होती है। जिस तरह की संगति में हम रहते हैं, वैसी ही गुणात्मकता अथवा निकृष्टता नैसर्गिक रूप से हमारे चरित्र को आच्छादित कर देती है और धीरे-धीरे हम उसके समकक्ष अथवा उसी श्रृंखला में अग्रिम स्थिति में आने या लक्ष्य पाने को उत्प्रेरित अथवा बाध्य हो जाते हैं।

एक अवगुण, सौ गुणों के महत्व को भी धूल-धूसरित करने में देर नहीं लगाता। कलियुग में गुणात्मकता, पुण्य, सत्य व आदर्श का प्रसार जितनी धीमी गति से होता है, उसकी अपेक्षा असत्य, पाप, अवगुण व नकारात्मकता का प्रभुत्व, प्रभाव व प्रसार तीव्रतर गति से होता है। सत्य को सत्य सिद्ध करने के लिए एकमात्र सत्य ही होता है, जबकि एक असत्य, सत्य को असत्य सिद्ध करने के लिए सैकड़ों सत्यों की सप्रमाण रचना कर देता है। कुसंगति के प्रभाव से जहां गुणात्मकता कलुषित होती है, वहीं असत्य व अवगुणों को सीना फुलाकर अन्यान्य मार्गों में आगे बढ़ने के अवसर मिल जाते हैं। इससे सत्य जहां कु-परिभाषित होकर झूठ के कठघरे में खड़े हो जाने के लिए बाध्य हो जाता है, वहीं असत्य एवं अवगुण को गरिमा, महत्व एवं उपादेयता की हांडी हाथ लग जाती है। जिस अनुपात में सज्जन के सत्संग से दुर्जन की गुणात्मकता का ग्राफ ऊपर की ओर बढ़ता है, उसी अनुपात में दुर्जन की संगति से सज्जन का चरित्र, व्यक्तित्व एवं गुणवत्ता क्रमश: कलंकित होती चली जाती है। कुसंगति, उस जोक की तरह है जो उनकी गुणात्मकता के लहू को सोख कर ही दम लेती है। ईश्वर, जीव के चरित्र, कर्म, चिंतन व संस्कारों के हिसाब से ही उसकी कोटि का निर्धारण करते हैं। यद्यपि हंस व कौआ दोनों जीव ही हैं किंतु विगत कर्मों की सकारात्मकता व नकारात्मकता ही उनके व्यक्तित्व को चारित्रिक दृष्टि से अलग-अलग रूप में परिभाषित करती है। दुर्जन व्यक्ति के चित्त का परिष्करण संभव नहीं है। किंतु सज्जन व्यक्ति सदैव चित्त व चिंतन की शुद्धि में विश्वास कर स्वयं को परिमार्जित व परिशुद्ध करता रहता है। कबीरदास कहते हैं :-

दाग जो लागा नील का, सौ मन साबुन धोय।

कोटि जतन पर बोधिये, काग हंस न होयङ्क

पापी, पाप करने के लिए अभिशप्त है; दुष्ट, दुष्टता के लिए और कृतघ्न, कृतघ्नता के लिए। इसलिए किसी की प्रकृति और प्रवृत्ति को, बिना उसकी जिज्ञासा, इच्छा व मनोवृत्ति के बदल पाना नितांत कठिन है। जीवन की दुर्लभता व समय की उपादेयता का लाभ उठाते हुए कुसंगति के दंश से सदैव बचना चाहिए क्योंकि नीच व्यक्ति का नीच कर्म से बाज आना संभव नहीं होता। कुसंगति के दुष्प्रभाव से किसका विनाश नहीं होता? नीचता ग्रहण करने से बौद्धिक चातुर्य समाप्त हो जाता है। गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं :-

को न कुसंगति पाय नसाई।

रहै न नीच मते चतुराई

संस्कारों की दृढ़ता, व्यक्तित्व को अधिक निर्भय बनाती है। जितना जिसके सद्चिंतन एवं सत्कर्म में दम होगा, उतना ही उसका प्रभुत्व अपने पास-परिवेश पर अधिक होगा। फिर कुसंगति का दैत्य उसका बाल-बांका भी नहीं कर सकेगा।

शिशु को नहलाते समय रखें इन बातों का ध्यान

नन्हें शिशु की देखभाल करना आसान नहीं होता। खासकर सर्दियों के मौसम में तो उन्हें विशेष देखभाल की जरूरत होती है, क्योंकि बच्चों का इम्यून सिस्टम बहुत कमजोर होता है, इस कारण वे जल्दी बीमार होते हैं। वहीं अगर बच्चे की पहली सर्दी हो, तब तो चुनौतियां और ज्यादा बढ़ जाती हैं। ऐसे में सबसे ज्यादा मुश्किल बच्चे को नहलाने में आती है। नहलाना जरूरी भी होता है, लेकिन जरा सी लापरवाही से समस्या भी बढ़ सकती है। अगर आप भी नई नई मां बनी हैं, तो परेशान होने की जरूरत नहीं। आज हम आपको बताएंगे नन्हें शिशु को नहलाने का आसान तरीका। इन तरीकों को आजमाकर आप टेंशन फ्री होकर बच्चे की देखरेख कर सकती हैं।

आमतौर पर मांओं को चिंता सताती है कि कहीं उनके बच्चों को सर्दी न लग जाए, इसलिए वे उसे गर्म पानी से नहलाती हैं। लेकिन बच्चे की स्किन बहुत सॉफ्ट होती है, ऐसे में गर्म पानी से बच्चे की स्किन को नुकसान हो सकता है। साथ ही नहाने के बाद अचानक से शरीर का तापमान कम होने से उसे सर्दी लगने का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए बच्चे को नहलाने का पानी गुनगुना रखिए जो न ज्यादा गर्म हो और न ज्यादा ठंडा।

बच्चों को नहलाने से पहले उनके शरीर की गुनगुने तेल से मालिश करनी चाहिए। सर्दियों में धूप में मालिश करें और अगर ठंडक ज्यादा हो तो कमरे के अंदर मालिश करें। मालिश करते समय कपड़ा जरूर डाल दें ताकि उसे ठंड न लगे। मालिश करने से शरीर को गर्माहट मिलती है। इसके बाद बच्चे को गुनगुने पानी से नहलाएं। नहलाते समय किसी केमिकल युक्त चीज का इस्तेमाल न करें। पानी में कुछ बूंदें नारियल, सरसों या जैतून तेल की बूंदें मिला लें। शिशु को नहलाने से पहले पूरी तैयारी करके रखें। उसे ज्यादा देर तक न नहलाएं और नहलाने के बाद फौरन तौलिए में लपेट दें और कमरे में ले जाकर दरवाजा बंद कर दें, ताकि कहीं से भी उसे हवा न लगे। इसके बाद उसे अच्छी तरह से गर्म कपड़े पहनाएं।

विंटर में कपड़ों के साथ कुछ इस तरह स्टाइल करें ज्वैलरी

आमतौर पर, लोग एक्सेसरीज के रूप में नेकपीस या पेंडेंट की लेयरिंग करना पसंद करते हैं। लेकिन इस मौसम में जब आप नेक को पूरी तरह से कवर कर देते हैं। तो ऐसे में सबसे अच्छा तरीका है कि आप इस लुक में लॉन्ग चंकी चेन्स को पहनें।

सर्दियों का मौसम आ चुका है और हम सभी ने घरों में जैकेट्स से लेकर स्वेटर को एक बार फिर से धूप लगाकर पहनने की तैयारी शुरू कर दी है। यह एक ऐसा मौसम है, जब हम खुद को पूरी तरह से कवर कर देना चाहते हैं ताकि ठंडी हवाएं हमें किसी भी तरह से नुकसान ना पहुंचा सके। लेकिन जब आप खुद को कवर अप करते हैं तो सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि इस मौसम में एक्सेसरीज को किस तरह स्टाइल किया जाए। अधिकतर मामलों में, लोग ज्वैलरी या एक्सेसरीज को स्किप ही कर देते हैं। हालांकि, आपको ऐसा करने की जरूरत नहीं है। आज हम आपको विंटर वियर के साथ ज्वैलरी को स्टाइल करने के कुछ बेमिसाल तरीकों के बारे में बता रहे हैं-

आमतौर पर, लोग एक्सेसरीज के रूप में नेकपीस या पेंडेंट की लेयरिंग करना पसंद करते हैं। लेकिन इस मौसम में जब आप नेक को पूरी तरह से कवर कर देते हैं। तो ऐसे में सबसे अच्छा तरीका है कि आप इस लुक में लॉन्ग चंकी चेन्स को पहनें। भले ही आप हाई नेक अपर वियर को कैरी करें, लेकिन उसके ऊपर लॉन्ग चेन्स बेहद ही स्टनिंग लुक देती हैं।

बेल्ट को यूं तो आप किसी भी मौसम में कैरी कर सकते हैं। लेकिन विंटर वियर के साथ यह बेहद ही अच्छे लगते हैं। आप चाहें स्वेटर ड्रेस पहनें या फिर वुलन आउटफिट, उसके ऊपर बेल्ट को स्टाइल करके अपने लुक को खास बना सकते हैं। जब मौसम वास्तव में ठंडा होता है, तो आप कोट, स्कार्फ, टोपी और दस्ताने पहन लेती हैं, जिससे आपकी बॉडी काफी हद तक कवरअप हो जाती है। ऐसे में एक्सेसरीज पहनने पर भी वह विजिबल नहीं होगी। लेकिन कैप आदि पहनने पर भी आपके कान नजर आते हैं तो ऐसे में आप इयररिंग्स को लेकर थोड़ा एक्सपेरिमेंटल हो सकती हैं। इसलिए, आप डिफ्रेंट इयररिंग्स को स्टाइल करने की कोशिश करें। मसलन, अगर आप स्कार्फपहन रही हैं तो ऐसे में आप स्टड इयररिंग्स पहन सकती हैं। वहीं, अगर आप स्कार्फनहीं पहन रही हैं तो ऐसे में आप लॉन्ग, डैंगल्स या फिर स्टेटमेंट इयररिंग्स पहनकर भी अपने लुक को खास बना सकती हैं।

दिवाली पर नया फर्नीचर खरीदने वाले हैं तो इन बातों का रखें खास ध्यान

बहुत से लोग दिवाली पर घर के लिए फर्नीचर खरीदना पसंद करते हैं जो सही भी है क्योंकि नया फर्नीचर घर आने वाले मेहमानों को आकर्षित करता है और आपको भी अच्छा महसूस कराता है। हालांकि, दिवाली के मौके पर फर्नीचर खरीदने से पहले कुछ बातों का ध्यान रखना बेहद जरूरी है, वर्ना आपको नुकसान हो सकता है। चलिए आपको ऐसी ही कुछ आवश्यक बातों के बारे में बताते हैं।

तय कर लें बजट

कोई भी चीज खरीदने से पहले बजट तय करना एक अच्छी आदत है। उदाहरण के लिए अगर आपको घर के लिए फर्नीचर खरीदना है तो सबसे पहले बजट तय करें कि आपको कितने बजट के आसपास सारा फर्नीचर खरीदना है। इसके अलावा किसी एक फर्नीचर पर ज्यादा पैसे खर्च करने से बचें क्योंकि ऐसा करने पर आपको अन्य फर्नीचर की खरीदारी के दौरान पैसे की कमी पड़ सकती है और उनकी गुणवत्ता के साथ समझौता करना पड़ सकता है।

उपलब्ध हो जगह

बात चाहें दिवाली पर फर्नीचर खरीदने की हो या फिर किसी अन्य दिन की, इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि आपको किस आकार का फर्नीचर खरीदना है। दरअसल, लोग किसी भी आकार का फर्नीचर खरीद लाते हैं और फिर बाद में उन्हें मालूम पड़ता है कि कमरे में फर्नीचर के लिए उतनी जगह उपलब्ध नही है, जितनी होनी चाहिए थी। इसलिए बेहतर होगा कि पहले कमरे में मौजूद जगह को नाप लें और इसके बाद फर्नीचर खरीदें।

गुणवत्ता की करें जांच

इस बात में कोई दो राय नहीं है कि आजकल बाजार में धोखाधड़ी के बहुत मामले सामने आते हैं, खासकर त्योहारों के मौसम में। अगर आप धोखाधड़ी से दूर रहना चाहते हैं तो फर्नीचर खरीदते समय उसे चारों तरफ से अच्छे से चेक कर लें। कभी-कभी क्या होता है कि कई दुकानदार नीचे से या पीछे से सस्ते किस्म की लकड़ी लगा देते हैं। इसलिए फर्नीचर की गुणवत्ता को पूरी तरह से जांचने के बाद ही उसे खरीदें।

थीम का भी रखें ध्यान

अगर आप चाहते हैं कि जो फर्नीचर आप खरीदे उससे घर को क्लासी लुक मिले तो किसी भी फर्नीचर को खरीदकर घर लाने से पहले एक थीम तय कर लें। थीम से हमारा मतलब यह है कि आपको किस रंग या किस डिजाइन में घर के लिए फर्नीचर खरीदना है। ये भी जरूर ध्यान रखें कि आप जो फर्नीचर खरीद रहे हैं वो बेडरूम के लिए है या फिर लिविंग रूम के लिए।

शब्द सामर्थ्य -110

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. आय व्यय का लेखा-जोखा, गणित, एकाउंट 3. विनती, अदब 6. दृष्टांत, सुपुर्दगी, उदाहरण 7. मूल्यवान, बहुमूल्य 8. अच्छे ढंग में गाया जाने वाला सुंदर गीत 10. बराबर, सम 12. मुख, चेहरा 14. अनुकृति, अनुकरण, असल का विलोम 17. दिमाग, मस्तिष्क 18. मनोहर, सुंदर, इच्छित, प्यारा 19. गर्मी, ताप 21. रसिया, प्रेमी, रसपान करने वाला 23. दबाव, भार 24. भीख 25. काम से जी चुराने वाला, आलसी।

ऊपर से नीचे

1. साहस, वीरता, बहादुरी 2. बहिन, प्रवाहित होना 3. प्रणय क्रीडा, सुखोपभोग, हावभाव 4. विश्वास, प्रतीति 5. इंतजार 9. खाने-पीने का सामान, रसद 11. नशीला, मदभरा 12. घायल, जख्मी 13. झुकना, प्रणाम, नमस्कार 14. दृष्टि, निगाह 15. तीव्रइच्छा 16. अर्थ, अभिप्राय, स्वार्थ 20. इम्तिहान, योग्यता आदि को परखना 22. जुल्म, अन्याय 23. पत्नी, बीवी, एक प्रत्यय।

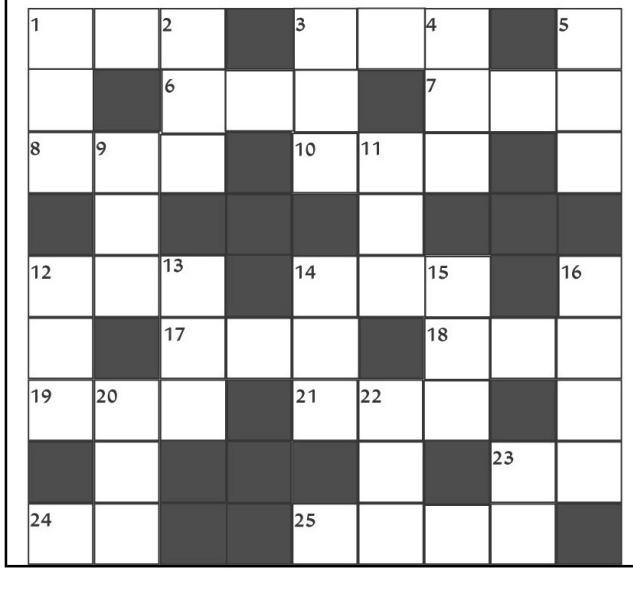

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 109 का हल

दा	ढ़ी		की		खा	सो	आ	म
वा		त	म	न्ना			जा	
न	जा	क	त		बा	अ	द	ब
ल		ली		वि	ला	प		हा
	अ	फ	सा	ना		मा	हि	र
दा	ब			श	गु	न		
न		उ	प	का	र		शि	
व		त्स		र		त	क	ला
	सा	व	न		गु	रु	वा	र

पुष्पा: द रूल से अल्लू अर्जुन की नई झलक आई सामने

अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना की फिल्म पुष्पा- द रूल इस साल की बहुचर्चित फिल्मों में से एक है। यह फिल्म पुष्पा- द राइज (2021) का सीक्वल है।अब फिल्म से अल्लू की नई झलक सामने आ गई है, जिसमें उनका धांसू अवतार दिख रहा है। पुष्पा राज बन वह एक बार फिर धमाल मचाएंगे को तैयार हैं।पुष्पा- द रूल 6 दिसंबर, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म का सामना फिल्म छावा से होगा।

बता दें, साउथ एक्टर ब्रह्मा ने फिल्म पुष्पा 2 की शूटिंग खत्म होने की जानकारी दी है. एक्टर ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो भी शेयर किया है. वीडियो में पुष्पा 2 के डायरेक्टर, ब्रह्मा, फहाद फासिल और एनिमल एक्टर सौरभ सचदेवा भी दिख रहे हैं. यह सभी एक कार में हैं. कार पुष्पा 2 के विलेन भंवर सिंह शेखावत फहाद चला रहे हैं. वहीं, पुष्पा 2 में शॉकिंग एंट्री सौरभ सचदेवा की है, जिन्होंने फिल्म एनिमल में बॉबी देओल के छोटे भाई का रोल प्ले किया था. सौरभ को फिल्म एनिमल से खूब शोहरत मिली है. अब पुष्पा 2 में सौरभ की एंट्री बताती है कि फिल्म और भी ज्यादा धांसू होने वाली है.

पुष्पा- द रूल के निर्देशन की कमान सुकुमार कर रहे हैं। पहले भाग का निर्देशन भी उन्होंने ही किया था।इस फिल्म में फहद फासिल भी अपनी अदाकारी का तडक़ा लगाते हुए नजर आएंगे। एसपी भंवर सिंह शेखावत उनकी झलक पहले ही सामने आ चुकी है।पुष्पा- द रूल हिंदी समेत तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ के साथ बंगाली भाषा में भी रिलीज होगी।यह पहली पैन-इंडिया फिल्म है, जो बंगाली भाषा में रिलीज होने वाली है।

कार्तिक आर्यन की फिल्म भूल भुलैया 3 का मुख्य गाना जारी

पिछले लंबे समय से अभिनेता कार्तिक आर्यन अपनी आगामी फिल्म भूल भुलैया 3 को लेकर सुर्खियां बटोर रहे हैं। इस फिल्म में कार्तिक की जोड़ी पहली बार अभिनेत्री तृप्ति डिमरी के साथ बनी है।इसके अलावा विद्या बालन और माधुरी दीक्षित भी इस फिल्म में अपनी अदाकारी का तडक़ा लगाती हुई नजर आएंगी।अब निर्माताओं ने भूल भुलैया 3 का मुख्य गाना जारी कर दिया है, जिसमें कार्तिक जबरदस्त डांस करते नजर आ रहे हैं।

इस गाने को पिटबुल, नीरज श्रीधर और दिलजीत दोसांझ ने साथ मिलकर तैयार किया है।भूल भुलैया 3 इस साल दीवाली के खास मौके पर यानी 1 नवंबर, 2024 को सिनेमाघरों में दस्तक देने को तैयार है। बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म का सामना अजय देवगन की फिल्म सिंघम अगेन से होगा।भूल भुलैया 3 2007 में आई फिल्म भूल भुलैया की तीसरी किस्त है। इस फिल्म के निर्देशन की कमान अनीस बज्मी ने संभाली है।

प्रियंका चोपड़ा ने स्विस आल्प्स पर पूरा किया बॉलीवुड का सपना, 'देसी गर्ल' बनी चांदनी

'देसी गर्ल' प्रियंका चोपड़ा जोनस सोशल मीडिया पर एक्टिव रहती हैं और अक्सर शानदार झलकियां फैंस के साथ साझा करती रहती हैं। इस बीच प्रियंका ने इंस्टाग्राम स्टोरीज सेक्शन पर एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें वह आल्प्स की बर्फ से ढकी पहाडिय़ों में घूमती नजर आ रही हैं।

प्रियंका चोपड़ा ने इंस्टाग्राम अकाउंट की स्टोरी सेक्शन पर वीडियो साझा किया है, जिसमें वह एक लंबी जैकेट के साथ नीले रंग की बॉडी हगिंग ड्रेस पहने नजर आ रही हैं।

साझा किए गए वीडियो के साथ एक्ट्रेस ने कैप्शन में लिखा 'क्रेन्स मोंटाना, आल्प्स, स्विट्जरलैंड में अपने बॉलीवुड सपने को जी रही हूं'। वीडियो क्लिप में प्रियंका ने 'चांदनी ओ मेरी चांदनी' गाना भी जोड़ा है। यह गाना फिल्म चांदनी का है, जो साल 1989 में रिलीज हुई थी। इस फिल्म में श्रीदेवी और ऋषि कपूर मुख्य भूमिका में थे। इसके अलावा प्रियंका ने स्विस आल्प्स में अपने विज्ञापन शूट की कई तस्वीरें भी शेयर की हैं। पहली तस्वीर में वह नीले रंग की बॉडी हगिंग ड्रेस पहने नजर आ रही हैं। दूसरी तस्वीर में वह अपनी खिडक़ी के पास बैठकर बर्फीले नजारे का आनंद ले रही हैं। एक और वीडियो है, जिसमें वह अपने विज्ञापन की शूटिंग करते हुए बर्फीले तूफानों के बीच नजर आ रही हैं।

अपनी तस्वीरों और वीडियो के साथ उन्होंने एक टेक्स्ट नोट भी जोड़ा, जिसमें लिखा है 'स्विट्जरलैंड में मेरे कैंपेन शूट से बस एक छोटा सा बीटीएस, असली बर्फीले तूफान के बीच, लेकिन हमने जो मजा किया वो बहुत मजेदार था।'

इस बीच प्रियंका ने फ्रैंक फ्लॉवर द्वारा निर्देशित 'द ब्लफ' की शूटिंग पूरी कर ली है। इसके अलावा वह 'सिटाडेल सीजन-2' पर भी काम कर रही हैं। प्रियंका चोपड़ा के प्रोडक्शन वेंचर पानी को भी बहुत जल्द सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा। यह पर्यावरण के मुद्दों पर आधारित एक मराठी फिल्म है।

प्रियंका चोपड़ा कुछ महीने पहले अपनी फिल्म 'पानी' का ट्रेलर लॉन्च करने के लिए भारत आई थीं। प्रियंका ने तमिल फिल्म तमिजान से अपने अभिनय की शुरुआत की थी। बाद में उन्होंने द हीरो-लव स्टोरी ऑफ ए स्पाई से बॉलीवुड में कदम रखा था।

उन्होंने फिल्म अंदाज से अपने अभिनय कौशल को साबित किया, जिसमें वह लारा दत्ता, अक्षय कुमार के साथ लीड रोल में थीं। इसके साथ ही वह एतराज में अक्षय कुमार और करीना कपूर के साथ निगेटिव रोल में नजर आई थीं। फिल्म में प्रियंका की एक्टिंग को काफी सराहा गया था।

कुछ-कुछ होता है' के 26 साल पूरे, करण जौहर ने दिखाई अनदेखी झलक

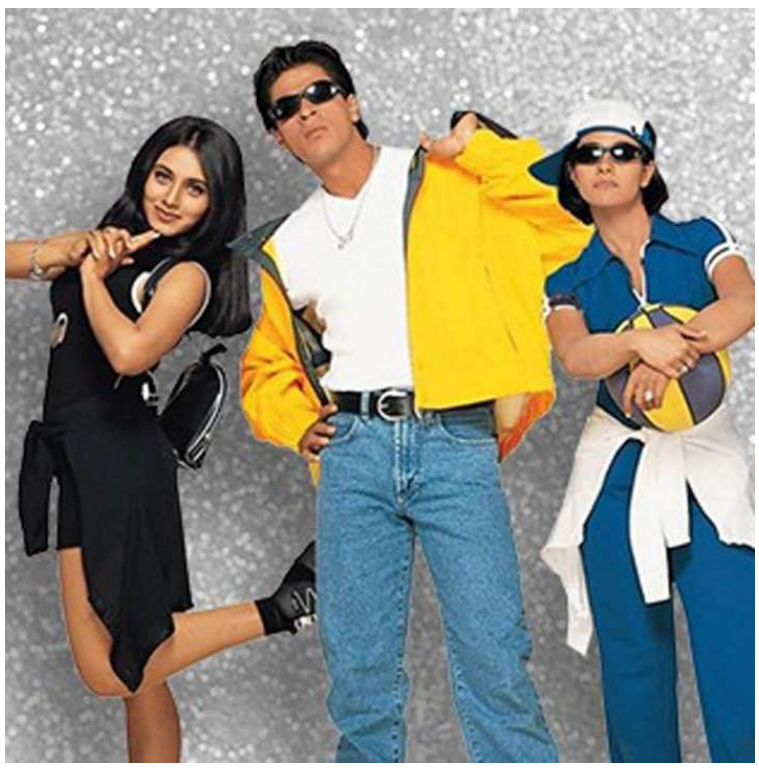

शाहरुख खान, काजोल और रानी मुखर्जी स्टारर 'कुछ कुछ होता है' ने इस माह के 16 अक्टूबर, 2024 को अपनी रिलीज के 26 साल पूरे कर लिए हैं। इस उपलब्धि का जश्न मनाने के लिए करण जौहर ने सोशल मीडिया हैंडल पर एक खास वीडियो शेयर किया है। करण जौहर ने सेट से कुछ खास अनदेखे पलों वाल एक वीडियो मोंटाज शेयर किया। क्लिप के साथ फिल्म निर्माता ने लिखा 'कूल नेक चेन, नियॉन शर्ट, पिंक हेड बैंड, केवल डांस के साथ समर कैंप, टूटे तारों की कामना, बास्केटबॉल में धोखा, दोस्ती जो प्यार में बदल जाती है और ऐसे किरदार जो समय और उससे आगे भी जीते हैं!!

इसके साथ ही करण ने 1998 की इस रोमांटिक ड्रामा फिल्म के 26 साल पूरे होने पर एक भावुक नोट भी शेयर किया है। करण ने कहा 'एक निर्देशक के रूप में मेरी पहली फिल्म, जो सेट पर सबसे बेहतरीन कास्ट और क्रू के साथ, आपके पहले दिन के उस एहसास को जीवित रखता है...26 साल बाद भी! करण जौहर की पोस्ट पर फैंस के साथ ही मशहूर हस्तियां भी जमकर प्यार दे रही हैं।

कुछ कुछ होता है में शाहरुख खान, काजोल और रानी मुखर्जी लीड रोल में थे। वहीं, सलमान खान गेस्ट रोल में नजर आए थे। कुछ-कुछ होता है फिल्म ने कई पुरस्कार जीते, जिसमें सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय फिल्म का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी शामिल था।

इसके साथ ही फिल्म ने आठ फिल्मफेयर पुरस्कार भी जीते, जिसमें करण जौहर को सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, शाहरुख को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और काजोल को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार भी मिला। वहीं रानी मुखर्जी इस फिल्म में टीना के किरदार के जरिए दर्शकों के दिलों पर छाप छोडऩे में कामयाब रही थीं, जिसने सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री का फिल्मफेयर पुरस्कार जीता था। फिल्म में शाहरुख और काजोल की केमिस्ट्री वास्तव में मुख्य आकर्षण का केंद्र थी। कुछ कुछ होता है के 26 साल पूरे होने पर दुनिया भर के प्रशंसक इस फिल्म को फिर से देख रहे हैं।

भारत को गुलामी की बेड़ियों से आजाद कराने के लिए लड़ने वाले महान नायक नेताजी सुभाष चंद्र बोस

सुरेश मुंजाल

परिचय – आजाद हिंद सेना का नाम लेते ही आंखों के सामने आते हैं देश की स्वतंत्रता के लिए विश्व भर में भ्रमण करने वाले नेताजी सुभाष चंद्र बोस,चलो दिल्ली की घोषणा करते हुए हिंदुस्तान मे आने वाली स्वतंत्रता संग्राम की कल्पना से आनंदित सेना और देश के लिए प्राणार्पण करने के लिए इच्छुक हिंदुस्तानी महिलाओं की झांसी की रानी की पलटन । नेता जी का योगदान और प्रभाव इतना महान था कि कुछ विद्वानों का मानना है कि यदि नेताजी उस समय भारत में उपस्थित होते, तो संभवत: विभाजन के बिना भारत एक संयुक्त राष्ट्र बना रहता। स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले स्वतंत्रता सेनानियों में नेताजी सुभाष चंद्र बोस का नाम सबसे पहले आता है। नेताजी की सोच में एक अलग ही ऊर्जा थी, जिसने कई देशभक्त युवाओं के मन में उत्साह निर्माण किया। सुभाष चंद्र बोस अपने दृढ़ संकल्प और अपनी सोच से कभी समझौता नहीं करने के लिए जाने जाते थे। वे न केवल भारत के लिए परंतु दुनिया के लिए भी प्रेरणा के स्रोत हैं। उन्होंने तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा, इस घोषणा से प्रत्येक भारतीयों के मन में राष्ट्र प्रेम की ज्योत जला दी । अंग्रेजों से लड़ने के लिए संघर्ष किया परंतु प्रश्न यह है कि स्वतंत्र भारत के नागरिक के रूप में भारत के इस महान नेता के विषय में कितना जाना जाता है? 23 जनवरी, सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती के उपलक्ष्य में उनसे संबंधित कुछ प्रसंग इस लेख में देने का प्रयास किया है । यह निश्चित रूप से हर भारतीय को प्रेरित करेगा।

शिक्षा और छात्र जीवन – नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी का जन्म 23.०1.1897 को कटक में एक बंगाली परिवार में हुआ था। उन्होंने इंग्लैंड में आई. सी. एस. परीक्षा उत्तीर्ण की तथा आगे चलकर उन्होंने अपनी आई.सी.एस. डिग्री का त्याग किया । अंग्रेज जो अपने ही देशवासियों को सताते हैं उनकी नौकरी कभी नहीं करेंगे। ऐसे उन्होंने निश्चय किया । बचपन में सुभाष चंद्र बोस जिस विद्यालय में पढ़ रहे थे, उसके शिक्षक वेणीमाधव दास ने सुभाष चंद्र में छिपी देशभक्ति को जगाया। स्वामी विवेकानंद के साहित्य को पढ़ने के बाद सुभाष चंद्र उनके शिष्य बन गए। महाविद्यालय में पढ़ते समय, उन्होंने अन्याय के विरुद्ध लड़ने की प्रवृत्ति विकसित की। कोलकाता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में अंग्रेजी के प्रोफेसर ओटेन भारतीय छात्रों के साथ बदतमीजी करते थे। इसलिए सुभाष चंद्र ने कॉलेज में हड़ताल का आह्वान किया था।

स्वतंत्रता संग्राम में प्रवेश और कार्य – कोलकाता के एक वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी चित्तरंजन दास के काम से प्रभावित होकर सुभाष बाबू, दास बाबू के साथ काम करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने इंग्लैंड से दास बाबू को पत्र लिखकर, उनके साथ काम करने की इच्छा प्रकट की थी ।1922 में, दासबाबू ने कांग्रेस के अंतर्गत स्वराज पक्ष की स्थापना की। बाद में चुनाव जीतकर दास बाबू स्वयं कोलकाता के मेयर बने। उन्होंने सुभाष बाबू को एनएमसी/महापालिका का मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनाया। सुभाष बाबू ने अपने कार्यकाल में एनएमसी/महापालिका का काम बहुत अच्छे से किया। कोलकाता में सड़कों के अंग्रेजी नाम बदलकर भारतीय नाम कर दिए गए। स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले क्रांतिकारियों के परिवारों को नगर निगम में नौकरी दी गई।

भारतीय स्वतंत्रता संगठन और आजाद हिंद रेडियो की स्थापना नाजीवादी जर्मनी में रहना और हिटलर से भेट – बर्लिन में सुभाष बाबू सबसे पहले रिबेंट्रोप और अन्य जर्मन नेताओं से मिले। उन्होंने जर्मनी में भारतीय स्वतंत्रता संगठन और आजाद हिंद रेडियो दोनों की स्थापना की। इस अवधि के दौरान सुभाष बाबू को %नेताजी% के नाम से जाना जाने लगा। जर्मन सरकार में मंत्री एडम वॉन ट्रॉट सुभाष बाबू के अच्छे दोस्त बन गए।

1937 में जापान ने चीन पर आक्रमण किया। फिर, सुभाष बाबू की अध्यक्षता में, कांग्रेस ने चीनी लोगों की सहायता के लिए डॉ द्वारकानाथ कोटनिस के नेतृत्व में एक चिकित्सा दल भेजने का फैसला किया। बाद में जब सुभाष बाबू ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जापान की मदद मांगी तो उन्हें जापान का हस्तक और फासिस्ट कहा गया। परंतु उपरोक्त घटना साबित करती है कि सुभाष बाबू न तो जापान के हस्तक थे और न ही वे फासिस्ट विचारधारा से सहमत थे।

फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना – 3 मई 1939 को सुभाष बाबू ने कांग्रेस के अंतर्गत फॉरवर्ड ब्लॉक के नाम से अपना पक्ष बनाया। कुछ दिनों बाद सुभाष बाबू को कांग्रेस से निकाल दिया गया। फॉरवर्ड ब्लॉक बाद में एक स्वतंत्र पक्ष बन गया।

द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने से पहले ही, फॉरवर्ड ब्लॉक ने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष को तेज करने के लिए एक जन जागरूकता अभियान चलाया। इसलिए, ब्रिटिश सरकार ने सुभाष बाबू सहित फॉरवर्ड ब्लॉक के सभी प्रमुख नेताओं को कैद कर लिया। द्वितीय विश्व युद्ध के समय सुभाष बाबू के लिए जेल में निष्क्रिय रहना संभव नहीं था। सरकार को उन्हें रिहा करने के लिए मजबूर करने के लिए, सुभाष बाबू जी ने जेल में भूख हड़ताल शुरू किया। इसके बाद सरकार ने उन्हें छोड़ दिया। परंतु ब्रिटिश सरकार युद्धकाल में सुभाष बाबू को खुला रखना नहीं चाहती थी। इसलिए सरकार ने उन्हें उनके घर में नजरबंद रखा।

आज़ाद हिंद सेना की स्थापना – नेताजी ने स्वराज्य की स्थापना के मुख्य उद्देश्य के साथ आजाद हिंद की एक अस्थायी सरकार बनाने का निर्णय लिया। 21 अक्टूबर 1943 को सिंगापुर में अर्जी-हुकुमत-ए-आझाद-हिंद की (स्वाधीन भारत की अंतरिम सरकार) की स्थापना की, नेताजी स्वयं इस सरकार के अध्यक्ष, प्रधान मंत्री और युद्ध मंत्री बने। इस सरकार को कुल नौ देशों ने मान्यता दी थी। नेताजी आजाद भारतीय सेना के कमांडर-इन-चीफ भी बने।

आजाद हिंद फौज में, ब्रिटिश सेना से जापानी सेना द्वारा पकड़े गए युद्ध के भारतीय कैदियों को भर्ती किया गया था। आजाद हिंद फौज में महिलाओं के लिए झांसी की रानी रेजीमेंट का भी गठन किया गया था।

पूर्वी एशिया में, नेताजी ने भारतीयों से आज़ाद हिंद सेना में भर्ती होने और उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करने का आग्रह करते हुए कई भाषण दिए। ये आवाहन करते हुए, उन्होंने, तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा। ऐसा नारा दिया । आजाद हिंद सेना ने बंगाल की खाड़ी में अंडमान और निकोबार के द्वीपों पर विजय प्राप्त की और उनका नाम क्रमश: शहीद और स्वराज्य रखा।

लापता और मौत की खबर – 18 अगस्त 1945 को नेताजी मंचूरिया के लिए उड़ान भर रहे थे। यात्रा के दौरान वे लापता हो गए । उसके बाद वो किसी को भी दिखाई नहीं दिए । 23 अगस्त 1945 को जापान की डोमी न्यूज एजेंसी ने दुनिया को बताया कि नेताजी का विमान 18 अगस्त को ताइवान की धरती पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था और नेताजी की अस्पताल में जलने से मृत्यु हो गई थी। नेताजी की अस्थियां जापान की राजधानी टोकियो के रेनकोजी नामक बौद्ध मंदिर में रखी गई । 18 अगस्त 1945 को नेताजी सुभाष चंद्र कैसे और कहां लापता हो गए थे और वास्तव में उनके साथ क्या हुआ यह भारत के इतिहास का सबसे बड़ा अनुत्तरित रहस्य बन गया है।

भारत रत्न पुरस्कार – 1992 में, नेताजी सुभाष चंद्र बोस को मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। हालांकि, सर्वोच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका के आधार पर पुरस्कार वापस ले लिया गया था। याचिकाकर्ता ने तर्क दिया कि नेताजी को मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित करना अवैध था क्योंकि उनकी मृत्यु का कोई सबूत नहीं था। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश द्वारा नेताजी को दिया गया पुरस्कार वापस ले लिया गया। इतिहास में यह एकमात्र ऐसा मामला है जब भारत रत्न पुरस्कार वापस लिया गया हो।

सू- दोकू क्र. 110

	7				1		3	
1		9				5		
			3				1	
		5						3
3					2		5	
				3				2
	4						7	
7		8		1		6		
	6		7		9			1

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.109 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

डॉ. मोहनराव भागवत: उपेक्षा जनित सक्रियता... ?

ओमप्रकाश मेहता

वह भी एक जमाना था, जब भारतीय जनता पार्टी के सत्तारूढ़ वरिष्ठ नेता अटल बिहारी वाजपेयी और लाल कृष्ण आडवानी अपनी सरकार का कोई भी अहम फैसला बिना राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की राय व पूर्व अनुमति के बिना नही लेते थे, पहले संघ को विश्वास में लेते थे, उसके बाद फैसला, किंतु पिछले एक दशक से स्थिति ठीक इसके विपरीत है, सत्ता उसी भारतीय जनता पार्टी की है किंतु आज वही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अपनी उपेक्षा से काफी पीड़ित व उद्वेलित है और इसी सत्ता की उपेक्षा ने संघ को अपने संगठन की साख बचाने हेतु नई सक्रियता की ऊर्जा प्रदान कर दी है, इसीलिए पिछले कुछ दिनों से संघ प्रमुख डॉ. मोहनराव भागवत काफी सक्रिय और व्यस्त नजर आने लगे है, अब उन्हें अपनी सरकार की किसी तरह की भी चिंता नही रही, इसीलिए वे अपने संगठन की साख की रक्षा में पूरी तरह जुट गए है, चाहे फिर सत्तारूढ़ नेता उनसे अनवरत् सम्बंध बनाकर रखें या नहीं?

इसकी उन्हें अब कोई चिंता नही रही, अब वे अपने संगठन की साख को कायम रखने में ही अपना सर्वस्व न्यौछावर करना चाहते है, ऐसे में यदि यह कहा जाए कि सत्तारूढ़ भाजपा व संघ के पदाधिकारी आमने-सामने खड़े नजर आ रहे है, तो कतई गलत नही होगा?

इसी सन्दर्भ में यहां यह भी उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों दक्षिण भारत में आयोजित संघ के राष्ट्रीय सम्मेलन में जाकर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने जो तेवर दिखाए थे, उनसे तभी यह तय हो गया था कि अब संघ और भाजपा एक साथ नही बल्कि दोनों आमने-सामने है और इस घटना के बाद से ही संघ के शीर्ष पदाधिकारियों ने अपने संगठन के अस्तित्व की लड़ाई खुद लडना शुरू कर दिया है, इसीलिए आज दोनों ही समान विचारधारावाले संगठनों के नेता अलग-अलग नजर आने लगे है और संघ कुछ अधिक ही सक्रिय नजर आने लगा है और शायद इसीलिए संघ प्रमुख डॉ. मोहनराव भागवत का शब्द चयन काफी तीखा हो गया है, कोई आश्चर्य नही कि संघ सक्षम प्रतिपक्ष की भूमिका में नजर आने लगें, क्योंकि जो आज सत्ता के सामने प्रतिपक्ष है, वह देश व देशवासियों के अधिकारों व सहूलियतों की रक्षा के लिए इतना सक्षम नजर नही आ रहा है और इन्हीं सब स्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए नेता प्रतिपक्ष की आलोचना भी शुरू हो गई है, इसीलिए ऐसी स्थिति में यदि संघ व उसके नेता प्रतिपक्षी की भूमिका में नजर आने लगे तो कोई आश्चर्य नही होगा?

इन्हीं सब स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में संघ प्रमुख मोहनराव भागवत के व्याख्यान ''द्विअर्थी'' नजर आने लगे है, कभी वे हिन्दू और हिन्दुत्व के नाम पर अपरोक्ष रूप से सत्ता पर हमला करते है तो कभी हमारे पड़ौसी देशों की साजिशों को सामने लाकर, आज एक और जहां प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने आपको विश्वस्तरीय लोकप्रिय नेता होने की झलक दिखाने का प्रयास करते है, तो कभी डॉ. मोहनराव भागवत विदेशी सम्बंधों व पड़ौसी देशों की कार-गुजारियों की आड़ में हमारी विदेश नीति की आलोचना कर रहे है, भागवत का स्पष्ट आरोप है कि हमारे सामाजिक रिश्तों को विदेशी ताकते अपनी साजिशों के माध्यम से ध्वस्त करने का प्रयास कर रही है और हम और हमारी सरकार खुली आंखों से यह सब चुपचाप देख रहें है, इस प्रक्रिया को नही रोका गया तो हमारा काफी नुकसान होगा।

अब उन्होंने यह चेतावनी भी देनी शुरू कर दी है कि यदि हम दुर्बल और असंगठित रहे तो वह हमारे लिए अत्याचार को निमंत्रण देने जैसा होगा, इसलिए हमें अभी से सचेत हो जाना चाहिए। इस प्रकार कुल मिलाकर अब भाजपा के ही शासनकाल में सत्ता-संगठन और संघ तीनों के स्वर अलग-अलग हो गए है और सत्तारूढ़ दल के साथ ऐसा होना स्थिति, परिस्थिति और देशकाल के लिए शुभ नही है। हमें समय रहते इस दिशा में सजग होना पड़ेगा। (ये लेखक के अपने विचार हैं)

कपकोट के 80 गांवों में रातभर रही बिजली गुल

बागेश्वर। ऊर्जा निगम ने कपकोट उप केंद्र में ट्रांस्फार्मर की क्षमता दो एमवीए बढ़ा दी है। इसके चलते शनिवार की रात तहसील के 80 गांवों ब्लैक आउट रहा। बिजली गुल रहने से ग्रामीण क्षेत्र की करीब 25 हजार की आबादी को परेशानियों का सामना करना पड़ा। जंगल क्षेत्र से लगे गांवों के लिए अधिक परेशान रहे। लोगों के मोबाइल फोन व अन्य विद्युत उपकरण शोपीस बनकर रह गए। शनिवार की शाम करीब छह बजे क्षेत्र की बिजली गुल हो गई, जो रविवार की सुबह दस बजे बाद सुचारू हो पाई। सरयू, रेवती तथा कनलगड़ घाटी के 80 गांव के लोगों ने बगैर बिजली के ही रात काटी। इन दिनों खेती किसानी का काम चल रहा है। बिजली के अभाव में सबसे अधिक किसान परेशान रहे। रविवार की सुबह दस बजे तक बिजली नहीं आने से लोगों की परेशानी बढ़ गई। बैटरी डिस्चार्ज होने से अधि कांश लोगों के मोबाइल फोन बंद हो गए, अन्य उपकरण भी ठप पड़ गए। इध र, ऊर्जा निगम के एसडीओ एसएस भंडारी ने बताया कि ट्रांसफार्मर की क्षमता बढ़ाने संबंधी कार्य के चलते बिजली आपूर्ति बाधित रही। दीपावली में किसी को दिक्कत न हो, इसके लिए विभाग मरम्मत कार्य कर रहा है।

कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द, पांच जगह खड़ रहेंगे अग्निशमन वाहन

हरिद्वार । दीपावली पर पटाखों के चलते अग्निकांड की घटनाएं हर साल सामने आती हैं। मुख्य अग्निशमन अधिकारी अभिनव त्यागी ने बताया कि अतिरिक्त फायर टेंडरों की तैनाती की गई है। संवेदनशील क्षेत्रों और बाजारों में फायर टेंडरों की संख्या बढ़ाई गई है। प्रमुख स्थानों पर दमकल वाहन और पानी के टैंकर चौबीस घंटे तैनात रहेंगे। बताया कि फायर स्टेशनों पर कर्मचारियों की छुट्टियां रद कर दी गई हैं। बताया कि पटाखों से होने वाली घटनाओं की रोकथाम के लिए विभिन्न कॉलोनियों और स्कूलों में जागरूकता अभियान चलाए गए हैं। जिसमें आमजन को पटाखों का सुरक्षित उपयोग और आग से बचाव के तरीके समझाए गए हैं।

ट्रांसफार्मर की आग पर फायर सर्विस ने पाया काबू

अल्मोड़ा । अल्मोड़ा फायर स्टेशन की टीम ने ट्रांसफार्मर में लगी आग को बुझाया। रविवार सुबह धारानौला रोड पर गोल मार्केट दुगालखोला के पास एक ट्रांसफार्मर में आग लग गई थी, जिसकी सूचना प्राप्त होते ही अग्निशमन अधि कारी महेश चंद्र के नेतृत्व में फायर स्टेशन अल्मोड़ा की टीम द्वारा तत्काल घटनास्थल पर पहुंचकर त्वरित कार्यवाही करते हुए विद्युत लाईन सप्लाई बंद करवाकर एक होजरील की सहायता से आग को पूर्ण रूप से बुझाया गया। यहाँ फायर सर्विस टीम में लीडिंग फायरमैन किशन सिंह, फायर सर्विस चालक विपिन बडोला, धीरेंद्र सिंह, इंदु मेहता, मेनिका, प्रियंका, आकांक्षा शामिल रहे।

पुलिस ने चलाया स्वच्छता अभियान

बागेश्वर। जिले में पुलिस ने स्वच्छता अभियान चलाया। पुलिस प्रागण के साथ-साथ आस पास के मार्गो में भी स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिस दौरान आम जनमानस को दीपावली पर्व में समाज एवं वातावरण में होने वाले प्रदुषण के बारे में बताते हुए, इसे रोकने को प्रेरित किया गया। साथ ही बताया कि स्वच्छता एक ऐसा महत्वपूर्ण अभियान है जो स्वयं, समाज, और पर्यावरण के लिए फायदेमंद है। स्वच्छता के महत्व स्वस्थ रहने का माध्यम, स्वच्छता अपनाकर हम खुद को रोगों से बचा सकते हैं और स्वस्थ रह सकते हैं। यह बीमारियों के प्रसार को रोकता है और अच्छे स्वास्थ्य को सुरक्षित रखता है ।

मुख्यमंत्री ने दीपावली पर्व पर ...

◀◀ पृष्ठ 1 का शेष

निगम में भर्तियों के माध्यम से मैन-पावर की समस्या का समाधान करना हो, हम पूरी प्रतिबद्धता के साथ उनके कल्याण के लिए कार्य कर रहे हैं। इस दीपावली के अवसर पर सेवाएं देने वाले चालकों, परिचालकों और तकनीकी कर्मचारियों को प्रोत्साहन राशि देने का भी फैसला किया गया है।

विधायक विनोद चमोली ने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में एक ही बार में बसों के बेड़े में 10 प्रतिशत की वृद्धि राज्य के लिए एक बड़ी सौगात है। इससे जहां लोगों का आवागमन सुगम होगा वहीं लोगों को अपनी विरासत से जोड़ने का कार्य मुख्यमंत्री ने किया है। उन्होंने कहा कि परिवहन निगम को और फायदे में लाने के लिए निरंतर प्रयास जरूरी है। आईएसबीटी का सौन्दर्यीकरण के साथ ही अतिक्रमण को रोकने के लिए निरंतर प्रयास करने होंगे। इस अवसर पर विधायक प्रमोद नैनवाल , सविता कपूर, मण्डल अध्यक्ष संजीव सिंघल, गढ़वाल कमिश्नर विनय शंकर पाण्डेय, उपाध्यक्ष एमडीडीए बंशीधर तिवारी, अपर सचिव परिवहन निगम नरेन्द्र जोशी, अनिल गर्ब्याल एवं परिवहन निगम के अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

विधायकों के वेतन- भत्ते व पेंशन बंद करवाकर ही दम लेगा मोर्चाः नेगी

कार्यालय संवाददाता

विकासनगर। जन संघर्ष मोर्चा अध्यक्ष एवं जीएमवीएन के पूर्व उपाध्यक्ष रघुनाथ सिंह नेगी ने पत्रकारों से वार्ता करते हुए कहा कि प्रदेश का इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है कि जो प्रदेश कर्ज के सहारे चल रहा हो तथा उसके ऊपर लगभग 90 हजार करोड़ की उधारी हो एवं प्रतिमाह लगभग 6600 करोड रुपए ब्याज के चुका रहा हो, ऐसे प्रदेश में एक विधायक को लगभग 3 लाख रुपए वेतन -भत्ते एवं 40,000 रूपए पेंशन प्लस स्लैब + 20,000 रुपए ईंधन भत्ता दिया जा रहा हो, इन हालातों में प्रदेश दिवालिया नहीं होगा तो और क्या होगा।

नेगी ने कहा कि इन गरीब विधायकों को प्रतिमाह वेतन- भत्तों के नाम पर डेढ़ लाख रुपया निर्वाचन क्षेत्र भत्ता, 30,000 रूपए वेतन, 60,000 रूपए जन सेवा भता, 27,000 रूपए ईंधन तथा 6,000 रूपए टेलीफोन/ मोबाइल खर्च इत्यादि हेतु दिया जा रहा है। इसके साथ-साथ विधायक निधि में भी बहुत बड़ा खेला ये लोग करते हैं।

❑प्रतिमाह 3 लाख के लगभग हैं वेतन- भत्ते, पेंशन है 40,000 रुपए से शुरु

नेगी ने कहा देश के इतिहास में यह अनूठा उदाहरण ही होगा कि वेतन 30,000 और पेंशन 40,000। सरकार को इन विधायकों को मिलने वाला निर्वाचन क्षेत्र भत्ता 1,50,0000, जन सेवा भत्ता 60,000 एवं वेतन 30,000 बिल्कुल बंद करना चाहिए। अगर देना ही है तो सिर्फ ईंधन, स्टेशनरी व पी.ए. भत्ता व चिकित्सा सुविधा आदि का ही लाभ दिया जाना चाहिए। ये जनता के सेवक हैं न कि सरकारी सेवक

नेगी ने कहा मोर्चा प्रदेश की जनता से भी आग्रह करता है कि इन विधायकों को धिक्कारें, जिससे ये कर्मचारियों एवं आमजन की पीड़ा को समझ सकें। कर्मचारी- अधिकारी दशकों तक सरकारी सेवा करते हैं, लेकिन इनको पेंशन नहीं, दूसरी तरफ ये विधायक शपथ लेते ही ताउम्र पेंशन के हकदार हो जाते हैं। मोर्चा शीघ्र ही इस लूट को बंद कराने हेतु उच्च न्यायालय की शरण लेगा। पत्रकार वार्ता में अशोक चंडोक व भीम सिंह बिष्ट मौजूद थे।

धौलादेवी ब्लॉक में खेल महाकुंभ का आयोजन

संवाददाता

अल्मोड़ा। ब्लॉक स्तरीय खेल महाकुंभ का आयोजन भनोली तहसील खेल मैदान में शुरू हुआ। प्रतियोगिता का शुभारंभ क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी अशोक कुमार एवं प्रधानाचार्य त्रिवेन्द्र सिंह ने किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि खेल महाकुंभ ने कई खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का मंच प्रदान किया है। जिस कारण आज क्षेत्र की खेल प्रतिभाओं ने राष्ट्रीय पटल पर अपनी प्रतिभा दिखाई है। इस मौके पर आयोजित अंडर 20 बालक वर्ग की 200 मीटर दौड़ में राहुल, 5000 मीटर दौड़ में गौरव पाण्डे, लंबी कूद में नरेंद्र सिंह, गोला क्षेपण में राहुल कुमार प्रथम स्थान पर रहे। बालिका वर्ग में गोला क्षेपण में नीतिका टम्टा प्रथम रही। अंडर 17 बालक वर्ग की 200 मीटर दौड़ में अंकित, 3000 मीटर दौड़ में राजेंद्र सिंह, गोला क्षेपण में अक्षय बिष्ट, लंबी कूद में आयुष जोशी, लंबी कूद बालिका वर्ग में राधा गैड़ा, 3000 मी दौड़ में सुनीता, गोला क्षेपण में प्रियंका प्रथम स्थान पर रहे। अंडर 14 बालक वर्ग की लंबी कूद में मोहित सिंह, 600 मीटर दौड़ में विजय कुमार, लंबी कूद बालिका वर्ग में भावना बिष्ट, बालक ऊंची कूद में संदीप, बालिका वर्ग में भावना बिष्ट प्रथम स्थान पर रही। सभी विजेताओं को मेडल देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर खेल समन्वयक राजेन्द्र नयाल, प्रधानाध्यापक बसन्त भट्ट, डॉ बृजेश डसीला, रमेश पांडेय, किशन सिंह मेहता, लोकेन्द्र सिंह, हरीश चौहान, गिरीश मेलकानी, वन्दना चौधरी आदि उपस्थित रहे। संचालन किशन मेहता एवं बृजेश डसीला ने संयुक्त रूप से किया।

पुलभट्टा थाने में पुलिस पर फायरिंग करने के आरोपी के खिलाफ केस दर्ज

संवाददाता

रुद्रपुर। पुलिस पर फायरिंग करने के आरोपी के खिलाफ पुलभट्टा थाने में मुकदमा दर्ज किया गया है। आरोपी ने अपने साथियों के साथ बीती 15 अक्टूबर की रात को नानकमत्ता क्षेत्र में वन कर्मियों पर फायरिंग की थी। तब वह पुलिस की पकड़ से फरार चल रहा था। बीती थाना पुलभट्टा अंतर्गत पुलिस से घिरता देख आरोपी ने फायरिंग कर दी थी।

पुलिस की जबावी फायरिंग पर आरोपी की दायी टांग में गोली लगी थी। थाना पुलभट्टा अंतर्गत बरा पुलिस चौकी इंचार्ज पंकज कुमार की तहरीर पर आरोपी के खिलाफ 109 बीएनएस और आर्म्स एक्ट में केस दर्ज किया है। पंकज कुमार ने तहरीर देकर आरोप लगाया कि बीती 26 अक्टूबर रात को कंट्रोल रूम से पुलभट्टा थाने में सूचना मिली कि कुछ दिन पूर्व नानकमत्ता में वन विभाग की टीम पर फायरिगं करने वाला बदमाश 38 वर्षीय जसपाल सिंह पुत्र संता सिंह निवासी ग्राम टुकड़ी थाना नानकमत्ता भागने की फिराक में शक्तिफार्म रोड से निकलने वाला है।

सूचना मिलते ही वह पुलिस बल के साथ शक्तिफार्म रोड पर चौंकिग करने लगे। रात्रि नौ बजकर पैतीस मिनट पर एसओजी प्रभारी निरीक्षक संजय पाठक, उनि. सुरेन्द्र सिंह रिगंवाल टीम के साथ वहां पहुंच गए और घटनाक्रम की जानकारी साझा की। सभी मिलकर चौकिंग करने लगे। रात्रि लगभग दस बजे कंट्रोल रूम के माध्यम से पुलिस टीम को सूचना मिली कि जसपाल बाइक पर सवार होकर शक्तिफार्म की ओर से हाईवे की तरफ आ रहा है। जिसके पीछे नानकमत्ता की पुलिस के उनि. संजय कुमार टीम के साथ लगे है। कुछ देर बाद शक्तिफार्म की ओर से एक मोटर साईकिल तेज गति से आती दिखाई दी जिसका पुलिस की गाडी पीछा कर रही थी।

आगे पीछे पुलिस से घिरता देख जसपाल बाइक से नीचे गिर गया और जंगल की ओर भागते हुए पुलिस टीम पर फायरिंग करने लगा। एसओजी प्रभारी संजय पाठक, उनि. एसओजी सुरेन्द्र सिंह रिंगवाल, बरा पुलिस चौकी इंचार्ज पंकज कुमार ने अपने सरकारी पिस्टल से एक-एक रांउड फायरिंग की। जिसमें जसपाल की दार्यी टांग में गोली लगी। जसपाल को सीएचसी में भर्ती कराया गया। पंकज कुमार की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ 109 बीएनएस और आर्म्स एक्ट में केस दर्ज किया है।

एक नजर

उत्तर प्रदेश के कई होटलों को मिली बम से उड़ाने धमकी

लखनऊ। गुजरात के बाद उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के कई होटलों को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। मेल भेज कर होटल को बम से उड़ाने की दी गई है। लखनऊ के राणा प्रताप मार्ग स्थित होटल फॉर्चून, लेमन ट्री, होटल मैरियट समेत कई होटलों को धमकी मिली है। इसके बाद आनन-फानन में होटल संचालकों ने इसकी जानकारी पुलिस को दी है। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस बड़े पैमाने पर जांच में जुट गई है। मेल भेजने वाले की भी जांच की जा रही है।भारत में इस साल अप्रैल से अक्टूबर तक कई स्कूलों, कॉलेजों, होटलों और हवाई अड्डों को बम की धमकी के ईमेल और कॉल मिले हैं। ये धमकियां दिल्ली, अहमदाबाद, बेंगलुरु, मुंबई और जयपुर सहित कई शहरों में दी गई। इसको लेकर स्थानीय स्तर पर पुलिस प्रशासन और सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट पर हैं। ज्यादातर धमकियां सोशल मीडिया मंचों के माध्यम से दी गई हैं। अब मामलों की जांच के लिए केंद्र सरकार मेटा और एक्स जैसी सोशल मीडिया एजेंसियों की मदद लेने जा रही है।इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने शनिवार को एक एडवाइजरी जारी की, जिसमें विभिन्न एयरलाइनों को मिल रही बम की फर्जी ध मकियों के प्रसार को रोकने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म सहित सभी मध्यस्थों की जिम्मेदारी तय की गई है और इन अफवाहों को रोकने में विफल रहने पर कार्रवाई की चेतावनी दी गई है।

हिमाचल प्रदेश में गहरी खाई में गिरी कार, 5 युवाओं की मौत

मंडी। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिला की चौहारघाटी के वरधाण में एक मारुति कार गहरी खाई में गिर गई। जिससे कार में सवार पांच युवकों की मौके पर मौत हो गई। यह भयानक हादसा शनिवार देर रात को हुआ। कार में सवार सभी युवक धमच्याण गांव के रहने वाले हैं। जो बरोट में शादी समारोह में गए थे। देर रात को वापिस घर लौटते बार यह हादसा हो गया। इसकी सूचना रविवार सुबह मिली जब एक भेड़पालक ने सड़क से करीब 700 मीटर नीचे खेतों में लुढ़की कार देखी। इसकी सूचना आस-पास के ग्रामीणों को दी। इसके बाद पंचायत प्रतिनिधियों ने मौके पर पहुंच कर घटना की सूचना टिक्कन पुलिस चौकी को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर क्षत विक्षत हाली में पड़े शवों को सड़क मार्ग तक पहुंचाने के लिए स्थानीय लोगों की मदद से रेस्क्यू शुरू किया है। मृतकों की पहचान राजेश, गंगू, कर्ण, सागर और अजय के रूप में हुई है। जिनमे एक सोलह वर्ष के करीब का किशोर और अन्य चार की उम्र 25 से 30 वर्ष के बीच मे बताई जा रही है। इस दु:खद हादसे से समूची चौहारघाटी में शोक की लहर छा गई है। बहरहाल पुलिस सभी शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल जोगेंद्रनगर लाएगी।

पश्चिम बंगाल में शांति तभी संभव है जब बांग्लादेश से घुसपैठ पर रोक लगेगी: शाह

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को बांग्लादेश से हो रही अवैध घुसपैठ को लेकर सख्त रुख अपनाते हुए कहा कि पश्चिम बंगाल में शांति तभी संभव है जब इस घुसपैठ पर रोक लगेगी। उन्होंने दावा किया कि 2026 में अगर भाजपा सत्ता में आती है, तो अवैध घुसपैठ पर नियंत्रण लगाया जाएगा। अमित शाह पेट्रापोल भूमि बंदरगाह पर नए यात्री टर्मिनल भवन और कार्गो गेट का उद्घाटन करने पहुंचे थे। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने पश्चिम बंगाल की सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सरकार पर तीखे हमले किए और भ्रष्टाचार के मुद्दे पर आलोचना की। शाह ने राज्य के लोगों से 2026 में राजनीतिक बदलाव की मांग की, ताकि राज्य में स्थाई शांति स्थापित की जा सके। उन्होंने कहा, ष्पश्चिम बंगाल में शांति तभी आ सकती है जब बांग्लादेश से होने वाली अवैध घुसपैठ को पूरी तरह से रोका जाएगा। भूमि बंदरगाहों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, और जब सीमाओं पर लोगों के वैध आवागमन की सुविधा नहीं होती, तब अवैध तरीके अपनाए जाते हैं, जिससे देश की शांति भंग होती है। शाह ने इस मौके पर राज्य में टीएमसी सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि भ्रष्टाचार और कानून व्यवस्था की बिगड़ी स्थिति ने राज्य की शांति और विकास में रुकावट पैदा कर दी है।

सीएम धामी ने 66 फीट ऊंचे राष्ट्रीय ध्वज स्मारक का लोकार्पण किया

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत, सर्वेचौक, ई०सी० रोड देहरादून में 66 फीट ऊंचे राष्ट्रीय ध्वज स्मारक का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने पलटन बाजार के मुख्य द्वार का लोकार्पण भी किया।

राष्ट्रीयता एवं देश प्रेम के भाव के लिए सर्वेचौक देहरादून में यह राष्ट्रीय ध्वज स्मारक स्थापित किया गया है। यह मार्ग देहरादून के मुख्य स्थलों राष्ट्रपति आशियाना, राजभवन, मुख्यमंत्री आवास, उत्तराखण्ड शासन का सचिवालय एवं अन्य महत्त्वपूर्ण संस्थानों को जोड़ता है। इस स्थान पर राष्ट्रीय ध्वज स्मारक की स्थापना जन सामान्य के हृदय में देश प्रेम एवं राष्ट्रीयता का भाव जाग्रत करने का प्रयास किया गया है। इस अवसर पर विधायक खजानदास, उपाध्यक्ष उत्तराखण्ड संस्कृति साहित्य एवं कला परिषद श्रीमती मधु भट्ट, भाजपा के महानगर अध्यक्ष श्री सिद्धार्थ अग्रवाल, एवं स्मार्ट सिटी परियोजना के अधिकारी उपस्थित थे।

चार परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित की गई आरओ और एआरओ की परीक्षा

हरिद्वार (सं)। उत्तराखंड लोक सेवा आयोग की समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (मुख्य) परीक्षा-2023 का आयोजन 26 अक्तूबर को दो और 27 अक्तूबर को एक सत्र में किया गया। परीक्षा हरिद्वार और हल्द्वानी के चार परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित की गयी। उत्तराखंड लोक सेवा आयोग के परीक्षा नियंत्रक अवधेश कुमार सिंह ने बताया कि इस परीक्षा में पंजीकृत कुल 2192 अभ्यर्थी पंजीकृत थे। 26 अक्तूबर को प्रथम सत्र में 1872 परीक्षार्थियों और द्वितीय सत्र में 1846 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। जबकि 27 अक्तूबर को 1811 परीक्षार्थियों ने परीक्षा में प्रतिभाग किया गया।

कार खंती में पलटने से चार लोग घायल

रुद्रपुर (सं)। पिपलिया नाथू के पास शनिवार रात कार खंती में पलट गयी। हादसे में कार में सवार चार लोग घायल हो गए। पुलिस व राहगीरों ने कार में फंसे सवारों को बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया। शनिवार रात कार खंती में पलटने की सूचना पर पुलिस घटनास्थल पर पहुंची। कार में सवार गुरप्रीत सिंह पुत्र सरवन सिंह निवासी ग्राम साबेपुर, अमनजोत सिंह पुत्र कृपाल सिंह निवासी ग्राम बिल्हौर, अमरिया पीलीभीत, दिलराज सिंह पुत्र दिलबाग सिंह निवासी ग्राम नकटपुरा, अनमोल सिंह पुत्र मेहताब सिंह निवासी तुर्कातिसौर को बाहर निकाला। सभी घायलों को उप जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया।

वन विभाग की टीम ने 246 टिन अवैध लीसा किया बरामद, तस्कर फरार

संवाददाता

अल्मोड़ा। वन विभाग की टीम ने जागेश्वर वन क्षेत्र से छापेमारी के दौरान 246 टिन लीसा बरामद किया है, वहीं तस्करों का पता नहीं चल पाया है। प्रदीप कुमार धौलाखण्डी प्रभागीय वनाधिकारी सिविल सोयम वन प्रभाग अल्मोड़ा के निर्देशों पर वन विभाग की टीम कार्यवाही कर रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार तड़के वन क्षेत्र जागेश्वर आकस्मिक छापेमारी में 246 लीसा भरे टिन बरामद किये हैं। रविवार तड़के करीब 4 बजे सूचना मिली कि दन्या क्षेत्र से एक वाहन बिना नम्बर का जिसमें लीसा अवैध रुप से ले जाया जा रहा है। जिस पर वन क्षेत्राधिकारी जागेश्वर केवलानन्द पाण्डे टीम सहित छापेमारी को निकले लेकिन लीसा तस्करों को इस छापेमारी की सूचना मिल गई थी तथा लीसा तस्कर धौलादेवी चिल मोटर मार्ग में सिंधिया मल्ला के पास सुनसान जगह पर 246 लीसा भरे टिनों को वाहन से उतारकर भाग गए। लीसा तस्करी में संलिप्त वाहन की तलाश की जा रही है। लीसा जब्त कर लीसा डिपो धौलादेवी लाया गया है। बरामद अवैध लीसा भरे टिनों पर भारतीय वन अधि नियम 1927 (उत्तराखंड संशोधन 2001) की सुसंगत धाराओं तथा लीसा नियमावली के तहत वन अपराध दर्ज कर जांच की जा रही है। यहाँ वन विभाग की टीम में वन दरोगा लक्ष्मण सिंह निष्ट, वन दरोगा अमर सिंह बिष्ट, बहादुर सिंह बिष्ट, कुन्दन सिंह बगडवाल तथा वन आरक्षी अमन शामिल रहे।

आर.एन.आई.- 59626/94
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार
संपादक
पुष्पा कांति कुमार
समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार
कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*
कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808
नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।